



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 37]

नई दिल्ली, मंगलवार, फरवरी 28, 2006/फाल्गुन 9, 1927

No. 37]

NEW DELHI, TUESDAY, FEBRUARY 28, 2006/PHALGUNA 9, 1927

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

( वाणिज्य विभाग )

( पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय )

निर्णायक समीक्षा

नई दिल्ली, 27 फरवरी, 2006

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीनी ताइपेई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित एकीलोनाइट्राइट ब्यूटाडीन रबड़ ( एनबीआर ) के आयात पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा।

सं. 15/1/2004-डीजीएडी.— 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात अधिनियम कहा गया है ) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान तथा उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995(जिसे इसके बाद नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

क. पृष्ठभूमि

- जबकि उपर्युक्त नियमों को ध्यान में रखते हुए चीनी ताइपेई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित एकीलोनाइट्राइट ब्यूटाडीन रबड़ (एनबीआर) के कथित पाटन के बारे में विनिर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात प्राधिकारी कहा गया है ) ने 1999 में पाटनरोधी जांच शुरू की थी और प्राधिकारी के दिनांक 28.09.1999 के प्रारंभिक जांच परिणाम के आधार पर दिनांक 2.11.1999 की सीमाशुल्क

अधिसूचना द्वारा चीनी ताइपेई से एनबीआर के आयात पर अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था । प्राधिकारी के अंतिम जांच. परिणाम दिनांक 23.02.2000 की अधिसूचना के माध्यम से अधिसूचित किए गए थे और राजस्व विभाग द्वारा संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु पर दिनांक 06.04.2000 की अधिसूचना के माध्यम से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था ।

3. घरेलू उद्योग द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 9क(5) की शर्तों के अधीन वर्ष 2003 में दायर विधिवत रूप से प्रमाणीकृत आवेदन, जिसमें शुल्क को पांच वर्ष की अवधि तक जारी रखने का अनुरोध किया गया था, के आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह जांच करने के लिए कि क्या शुल्क समाप्ति पर पाटन तथा क्षति जारी रहेगी अथवा फिर से लगेगी, उक्त उपाय हेतु दिनांक 15 सितंबर, 2004 की अधिसूचना द्वारा निर्णायक समीक्षा प्रक्रिया शुरू की । यह जांच 1 अप्रैल, 2003 से 31 मार्च, 2004 (जांच अवधि) की अवधि में दी गई । तथापि क्षति की जांच 2001-02 से 2003-04 की अवधि के लिए की गई ।

#### ख. प्रक्रिया

4. इस जांच के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया:
  - i) जांच की शुरुआत से संबंधित अधिसूचना के पश्चात संबद्ध देश के एकमात्र ज्ञात निर्यातक/आयातक अर्थात् मैसर्स नानटेक्स इण्डस्ट्री कंपनी लिमिटेड चीनी ताइपेई को नियम 6(4) के अनुसरण में अपेक्षित जानकारी हासिल करने के लिए शुरुआत अधिसूचना सहित प्रश्नावली भिजवाई गई । तथापि जांच शुरू होने के बाद संबद्ध देश के किसी भी निर्यातक ने प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत नहीं किए ।
  - ii) नियम 6(2) के अनुसरण में ताइपेई इकॉनॉमिक एण्ड कल्चर सेंटर, नई दिल्ली को जांच शुरू होने की जानकारी दी गई और अनुरोध किया गया कि वे संबंधित देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित अवधि में प्रश्नावली का उत्तर भेजने की सलाह दें । ताइपेई इकॉनॉमिक एण्ड कल्चर सेंटर, नई दिल्ली को पत्रों, याचिकाओं एवं प्रश्नावलियों की प्रतियां भी भिजवाई गई;

iii) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) तथा डीजीसीआईएंडएस से विगत तीन वर्षों के दौरान तथा जांच अवधि में संबद्ध वस्तुओं के आयात का ब्यौरा भेजने का अनुरोध किया गया;

iv) संबद्ध वस्तुओं के भारत स्थित ज्ञात आयातकों व उपयोगकर्ताओं को भी प्रश्नावली की प्रतियां आवश्यक कार्रवाई हेतु भिजवाई गईं । बहरहाल संबद्ध वस्तुओं के किसी भी आयातक ने निर्धारित प्रपत्र अथवा तरीके से प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत नहीं किए । तथापि निम्नलिखित आयातकों एवं अन्य इच्छुक पक्षों ने जांच में भाग लिया और जांच के विभिन्न चरणों में सामान्य उत्तर/टिप्पणियां प्रस्तुत कीं ।

ऑल इण्डिया फेडरेशन ऑफ रबर फुटवियर मैनुफैक्चरर्स

ऑल इण्डिया रबर इंडस्ट्रीज एसोसिएशन

मैसर्स सुन्दरम इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

मैसर्स सीपलकर ब्रदर्स

उपर्युक्त इच्छुक पक्षों के अभिमत की, जिस सीमा तक सुसंगत हो, समुचित स्थानों पर जांच की गई ।

v) विभिन्न इच्छुक पक्षों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का गैर गोपनीय पाठ सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया गया, जिसे इच्छुक पक्षों को अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया गया;

vi) घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त जानकारी का यथा संभव सीमा तक सत्यापन किया गया एवं सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) तथा आवेदकों द्वारा प्रस्तुत जानकारी के आधार पर इष्टतम उत्पादन लागत व भारत में संबद्ध वस्तुओं की निर्माण एवं बिक्री लागत की गणना की गई ताकि इस बात का अभिनिश्चय किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति की पूर्ति के लिए पर्याप्त होगा;

vii) इच्छुक पक्षों को मौखिक तौर पर सुनने के लिए दिनांक 17 मई, 2005 को सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया गया, जिसमें घरेलू उद्योग एवं संबद्ध वस्तुओं के आयातकों/उपयोगकर्ताओं के प्रतिनिधि एवं ताइपेई इकॉनॉमिक एण्ड कल्चर सेंटर, नई दिल्ली के प्रतिनिधि उपस्थित थे । सार्वजनिक सुनवाई में

उपस्थित पक्षों से मौखिक रूप में व्यक्त अभिमत लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया। इच्छुक पक्षों से प्राप्त लिखित वक्तव्य की जांच समुचित स्थानों पर की गई है।

- viii) उपरोक्त नियमावली के अनुसार, इन जांच-परिणामों के लिए शामिल आवश्यक तथ्यों और निर्धारण के आधार का खुलासा दिनांक 24 अगस्त, 2005 के पत्रों द्वारा सामान्य खुलासों द्वारा ज्ञात इच्छुक पक्षकारों को और शामिल पक्षकारों को गोपनीय खुलासों के जरिए किया गया। इन खुलासों पर इच्छुक पक्षकारों से प्राप्त टिप्पणियों पर भी इन जांच-परिणामों में विभिन्न पक्षकारों द्वारा साक्ष्य तथा आंकड़ों के साथ पुष्ट तथ्यों तथा दावों की सीमा तक विधिवत विचार किया गया है;
- ix) प्राधिकारी ने विभिन्न इच्छुक पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के संबंध में उनके गोपनीय दावों की जांच की है, जो जानकारी गोपनीय किस्म की है अथवा जो इच्छुक पक्षकारों द्वारा अगोपनीय सारांश सहित गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई है, उसे गोपनीय माना गया है। इस अधिसूचना में \*\*\* पर दी गई जानकारी याचिकाकर्ता द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत जानकारी है और प्राधिकारी द्वारा उक्त नियमावली के तहत उसी पर विचार किया गया है।

#### ग. विचाराधीन उत्पाद और वर्गीकरण

5. मूल जांच में शामिल उत्पाद ऐक्रिलोनिट्राइल बुटाडीन रबड़ (एनबीआर) रहा था और उसमें एन बी आर की सभी किस्में तथा ग्रेड अर्थात् निम्न, मध्यम और उच्च एनबीआर कवर किए गए थे। यह चूंकि अंतिम समीक्षा जांच है, अतः इस जांच के दायरे में इसी उत्पाद को कवर किया गया है।
6. एनबीआर का मूल रूप से प्रयोग वहां होता है जहां ऑयल रेसिस्टेंट, एब्रेजन रेसिस्टेंट और हीट रेसिस्टेंट अनुप्रयोग शामिल होते हैं। एन बीआर का व्यापक प्रयोग रक्षा, ऑटो मोबाइल, फुटवियर, फैब्रिकों, प्रिंटर्स, आयल फील्ड उत्पाद उद्योगों, आदि में होता है। यह उत्पाद चार-अंकीय स्तर पर उपशीर्ष सं० 40.02 के तहत और छः अंकीय स्तर पर सं० 4002.59 के तहत सिंथेटिक रबड़ की श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत है। यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और उसकी मौजूदा जांच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यता नहीं है। किसी भी इच्छुक पक्षकार

द्वारा विचाराधीन उत्पाद के दायरे तथा उसके वर्गीकरण के संबंध में कोई विशेष तर्क नहीं दिया गया है।

#### घ. घरेलू उद्योग तथा समान उत्पाद

7. मै0 अपार इण्डस्ट्रीज लि0, मुंबई ने पहले से ही लागू शुल्क की अंतिम समीक्षा हेतु आवेदन-पत्र दर्ज कराया है। आवेदक विभिन्न किस्मों तथा ग्रेडों के ऐक्रिलोनिट्राइल बुटाडीन रबड़ (एनबीआर) का एकमात्र उत्पादक है और उसका भारत में संबद्ध माल का संपूर्ण उत्पादन हिस्सा होता है। आवेदक द्वारा विनिर्मित उत्पाद तकनीकी तथा वाणिज्यिक दृष्टियों से संबद्ध देश से आयातित उत्पाद का प्रतिस्थापनीय है और इसीलिए उसे उक्त नियमावली के आशय के भीतर "समान वस्तु" माना गया है। यह आवेदक भारतीय पाटनरोधी नियमावली के आशय के भीतर "समान उत्पाद घरेलू उद्योग" है। किसी भी इच्छुक पक्षकार ने विचाराधीन उत्पाद, समान वस्तु के दायरे और यह समीक्षा आवेदन-पत्र दायर करने हेतु आवेदक की स्थिति के बारे में कोई यथेष्ट मुद्दा नहीं उठाया है।

#### ड. इच्छुक पक्षकारों के निवेदन तथा उठाए गए मुद्दे:

8. हालांकि किसी भी आयातक अथवा उपभोक्ता/उद्योग एसोसिएशन से कोई प्रश्नावली प्रत्युत्तर तो प्राप्त नहीं हुआ है, लेकिन सार्वजनिक सुनवाई पश्चात् लिखित निवेदनों सहित जांच के विभिन्न चरणों में प्राप्त इच्छुक पक्षकारों की टिप्पणियों को रिकॉर्ड में शामिल किया गया है और प्राधिकारी द्वारा उनकी निम्नानुसार जांच की गई है:-

##### ड.1 आल इण्डिया रबड़ इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन और ऑल इंडिया फ़ैडरेशन ऑफ़ रबड़ फुटवियर मैन्यूफ़ैक्चरर्स एसोसिएशन

9. इस जांच में विभिन्न चरणों पर अपने-अपने संक्षिप्त निवेदनों में उपरोक्त इच्छुक पक्षकारों ने तर्क दिया है:-
  - कि याचिकाकर्ता का आवेदन-पत्र अपूर्ण है और उसमें तथ्यों एवं आंकड़ों का खुलासा पूरा नहीं किया गया है तथा याचिकाकर्ता द्वारा विभिन्न सार्वजनिक मंचों पर प्रस्तुत आंकड़ों तथा तथ्यों में बहुत सी असंगतियां हैं।

- कि याचिकाकर्ता के उत्पादन/उत्पादकता तथा क्षमता उपयोग में काफी सुधार हुआ है और इसीलिए उन्हें कोई वास्तविक क्षति नहीं हुई है ।
- कि यह बात सर्वोपरि है कि प्रयोक्ताओं का हित भी संरक्षित है ।

## ड.2 सेपल्शर ब्रदर्स (इंडिया) प्रा० लि०

10. मै० सेपल्शर ब्रदर्स (इण्डिया) प्रा० लि० ने अपने संक्षिप्त निवेदन में कहा है कि:-

- वे चीनी ताइपेई से निर्यातित एनबीआर के एकमात्र इंडेन्टर/वितरक हैं । लेकिन वे उस देश के विरुद्ध लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के चलते कोई ज्यादा व्यापार नहीं कर पाए और जांच-अवधि के दौरान उन्होंने केवल \*\*\* मी.टन का मामूली सा व्यापार किया है ।
- उनकी आयात कीमत लगभग \*\*\* अम०डा०/मी.टन रही । सीआईएफ तथा सीवीडी तथा एडीडी सहित उनके ग्राहकों के लिए लैण्डेड लागत लगभग \*\*\* रु०/मी.टन रही जो स्थानीय उपलब्ध एनबीआर की इस लागत से कहीं अधिक रही ।
- उनकी बिक्रियां खास बाजार को ऐसे विनिर्दिष्ट अनुप्रयोग हेतु एनबीआर की जरूरत वाले सीमित संख्यक ग्राहकों के लिए की जाती हैं जिसका विनिर्माण स्थानीय उपलब्ध एनबीआर में से नहीं किया जा सकता हो । इन ग्रेडों का या तो घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है अथवा उनकी क्वालिटी ग्राहकों की संतुष्टि के अनुकूल नहीं होती है ।
- हालांकि उनके ताइपेई मालिकों की क्षमता तो अच्छी है लेकिन वे भारतीय बाजार की आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकते हैं क्योंकि दूसरी जगह उसकी मांग अत्यधिक है और कीमतें बेहतर मिलती हैं ।
- उनके मालिकों द्वारा निर्यातित उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क यदि पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है तो उसमें काफी कटौती की जाए ताकि भारतीय उद्योग अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रमुख भूमिका अदा कर सके ।

## ड.3 मै० सुन्दरम इण्डस्ट्रीज लि०, मदुरई

11. मै० सुन्दरम इण्डस्ट्रीज लि० ने ताइपेई से संबद्ध माल के आयातक के रूप में एक संक्षिप्त प्रत्युत्तर प्रस्तुत किया है और उन्होंने अन्य बातों के अलावा निवेदन किया है कि:-

- जबकि घरेलू उद्योग का हित पाटनरोधी शुल्क के जरिए संरक्षित किया जा रहा है लेकिन इस उत्पाद के उपभोक्ताओं को अत्यधिक लागत वृद्धि के लिए कोई संरक्षण प्राप्त नहीं है;
- वर्ष 2003-04 की जांच अवधि की तुलना में सप्लाई तथा मांग और कीमतों का मौजूदा परिदृश्य पूर्णतया भिन्न है। सप्लाई स्थिति तंग है और खड़ की सभी किस्मों तथा खड़ रसायनों की कीमतों में पिछले एक वर्ष में काफी वृद्धि हुई है;
- इस समय पाटन का प्रश्न संगत नहीं है क्योंकि ग्राहकों को इस उत्पाद की आफर तंग सप्लाई स्थिति के कारण आबंटन आधार पर विदेशी उत्पादकों द्वारा दी जा रही है। अतः यदि निर्णय पिछले आंकड़ों के आधार पर लिया जाता है तो ऐसी स्थिति में उपभोक्ताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा क्योंकि स्थिति अब पूरी तरह बदल गई है;
- प्राधिकारी को क्षमता की सीमा और प्रयोक्ताओं द्वारा अपेक्षित मात्रा एवं ग्रेडों की किस्म के अनुसार घरेलू प्रयोक्ताओं की जरूरतें पूरा करने हेतु घरेलू उद्योग की क्षमता पर भी विचार करना चाहिए;
- एक ग्रेड से दूसरे ग्रेड में बदलाव संबंधित विनिर्माता की सहायता से ही किया जा सकता है। अतः कीमत अन्तर के बावजूद भी उत्पादों का परिवर्तन सदैव व्यावहारिक नहीं होता है।

#### ड.4 घरेलू उद्योग के विचार

12. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि चीनी ताइपेई के निर्यातकों ने संगत उत्पादन लागत तथा कच्चे माल की लागत वृद्धि को समाहित करके भारतीय बाजार में पाटन गहन कर दिया है। उन्होंने आगे यह भी निवेदन किया है कि किसी भी अंतिम समीक्षा जांच में निर्दिष्ट प्राधिकारी से अपेक्षा होती है कि वह इस बात की जांच करें कि क्या लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने के परिणामस्वरूप पाटन तथा क्षति के जारी अथवा पुनरावृत्ति होने की संभावना है और इसीलिए मौजूदा पाटन तथा क्षति संगत नहीं हैं। उन्होंने तर्क दिया है कि चूंकि पाटनरोधी शुल्क पिछले पांच वर्षों से लागू हैं अतः क्षति मापकों की जांच मौजूदा शुल्कों के संदर्भ में की जानी चाहिए और समीक्षा में इस बात की जांच होनी चाहिए कि क्या पाटनरोधी शुल्क रद्द किए जाने पर घरेलू उद्योग को हो रही क्षति जारी रहेगी अथवा उसकी पुनरावृत्ति होगी।
13. इस संबंध में उन्होंने अन्य प्राधिकारियों के जांच-परिणामों (रूस तथा चीन के मूल के कैल्शियम धातु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के मामले में इसी

जांच परिणाम) का हवाला दिया है जिसमें यह निर्णय दिया गया था कि हालांकि समुदायिक उद्योग संबंधी कतिपय रुझानों जैसे बिक्रियों तथा बाजार हिस्से में सुधार तो हुआ लेकिन इस बात पर विचार किया गया कि सामुदायिक उद्योग को वास्तविक क्षति हो रही थी जिसमें विशेष रूप से, निरंतर कीमत दबाव तथा हानियां शामिल थीं। घरेलू उद्योग ने आगे यह भी तर्क दिया है कि एक अन्य मामले (फेरो सिलिको मैंगनीज के मामले में इसी जांच-परिणाम) में यह निर्णय दिया गया था कि हालांकि घरेलू उद्योग की स्थिति में जांच-अवधि में सुधार हो गया लेकिन सकारात्मक गतिविधि के अन्य देशों से होने वाले आयातों पर लगाए गए उपायों के प्रभाव से जोड़कर देखी जानी चाहिए।

14. घरेलू उद्योग ने आगे यह भी तर्क दिया है कि हालांकि ताइवान से हुए आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद उनके गिरावट तो आई है लेकिन पाटित कीमतों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद इस उत्पाद की अधिक वाणिज्यिक मात्रा जारी रही है। उन्होंने आगे यह भी तर्क दिया है कि लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद चीनी ताइपेई से आयात पाटित कीमतों पर जारी हैं और घरेलू उद्योग को पाटित आयातों की वजह से अब भी वास्तविक क्षति हो रही है। किसी भी तरह से प्राधिकारी से यह अपेक्षा है कि वे इस बात की जांच करें कि यदि प्राधिकारी को कोई मौजूदा पाटन एवं क्षति मालूम नहीं होती है तो क्या यदि ये शुल्क समाप्त किए जाते हैं तो क्या पाटन की पुनरावृत्ति होने और क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है। इस संबंध में घरेलू उद्योग ने अमरीका में अपीलीय निकाय -अर्जेटीना से आयल कंट्री ट्यूबुलर गुड्ज पर पाटनरोधी उपाय पर अंतिम समीक्षा का उल्लेख किया है। उक्त मामले में अपीलीय निकाय ने चयनक के जांच परिणाम को इसलिए रोक दिया कि पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3 में यथानिर्धारित दायित्व अंतिम समीक्षा में क्षति निर्धारण की संभावना पर लागू नहीं होता है। अपीलीय निकाय ने यह भी निर्णय दिया कि पाटनरोधी करार में जांच प्राधिकारियों को इस बात की मनाही नहीं है कि क्षति निर्धारण की संभावना के दौरान पाटित आयातों के संभाव्य प्रभावों का संचयन किया जाए। उन्होंने यह भी निर्णय दिया कि पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.3 की शर्तें अंतिम समीक्षा के संदर्भ में लागू नहीं होती हैं। अतः मौजूदा पाटन तथा कारणात्मक संबंधों पर इच्छुक पक्षकारों के तर्क इस जांच में सारहीन हैं।
15. घरेलू उद्योग ने आयातकों के इन तर्कों का भी विरोध किया है कि ताइपेई से आयात खास बाजार के लिए घरेलू उद्योग की कीमत की तुलना में अधिक कीमत



पर किए गए और तर्क दिया है कि संबद्ध देश का लैण्डेड मूल्य (पाटनरोधी शुल्क के बिना) समान ग्रेडों के लिए घरेलू उद्योग की कीमत से काफी कम है। उन्होंने इस दावे का भी विरोध किया है कि आयातित ग्रेडों के भिन्न फिनिश विनिर्देशन होते हैं।

16. उन्होंने इन तर्कों का भी विरोध किया है कि संबद्ध देश के निर्यातक को भारतीय बाजार की जरूरतों को पूरा करने में कठिनाई हो रही है क्योंकि दूसरी जगहों बेहतर मांग तथा बेहतर कीमतें मिल रही हैं। उन्होंने निवेदन किया है कि भारतीय ग्राहकों तथा अन्य देशों की कीमतों का अन्तर जांच अवधि के दौरान काफी कम हो गया है।
17. घरेलू उद्योग ने आगे यह भी तर्क दिया है कि जांच अवधि के बाद की स्थिति पर न तो कानूनी दृष्टि से विचार किया जा सकता है और न ही उसे वास्तव में अलग से देखा जा सकता है। किसी भी मापक में जांच अवधि पश्चात परिवर्तन आ सकता है और उसे चयनित आधार मानना उचित नहीं होगा। उन्होंने तर्क दिया है कि विश्वव्यापी बाजार में कीमतों में वृद्धि होने का यह अर्थ नहीं है कि कोई पाटन नहीं हो रहा है।
18. इस जांच में पक्षकारों के विचार नोट कर दिए गए हैं और उन पर यथासंगत सीमा तक इन जांच परिणामों में चर्चा की गई है।

#### च. गोपनीयता दावों की जांच

19. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के अगोपनीय निवेदनों की जांच की। आवेदक ने आयात आंकड़ों, अनुमानित सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमतों के संबंध में जानकारी अगोपनीय आधार पर प्रस्तुत की है और वाणिज्यिक दृष्टि से संवेदनशील जानकारी जैसे निर्यातक देश में इस उत्पाद की कीमत के बारे में एकत्र साक्ष्य, उनकी बिक्री तथा उत्पादन आंकड़े और अन्य क्षति-जानकारी की गोपनीयता का दावा किया है। किंतु अधिकांश क्षति-जानकारी से संबंधित सूचीकृत आंकड़े अगोपनीय आधार पर दिए गए हैं। जो जानकारी गोपनीय किस्म की हो और जो इच्छुक पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई हो तथा उन्होंने उसका अगोपनीय सारांश भी दिया हो तो ऐसी जानकारी को गोपनीय माना गया

है । किसी भी अन्य इच्छुक पक्षकार ने गोपनीय आधार पर कोई पक्की जानकारी दायर नहीं की है ।

## छ. पाटन का निर्धारण

20. प्राधिकारी ने विभिन्न प्राधिकारियों द्वारा अपनी अंतिम समीक्षाओं में अपनाई गई पद्धतियों पर आवेदकों द्वारा किए गए तर्कों और इस विषय पर डब्ल्यूटीओ के संगत विधिशास्त्र को नोट किया है । प्राधिकारी नोट करता है कि क्योंकि यह एक अंतिम समीक्षा जांच है, इसलिए शुल्क वापसी की स्थिति में पाटन के जारी रहने और उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना देखना जरूरी है । अतः इस मुद्दे की जांच निम्नानुसार की गई है:-

### छ.1 पाटन का जारी रहना अथवा उसकी पुनरावृत्ति

21. संबद्ध देश के संबद्ध माल के किसी भी निर्यातक से कोई प्रत्युत्तर प्राप्त नहीं हुआ है । हालांकि एक आयातक ने कहा है कि उन्होंने मैसर्स नेन्टेक्स इंडस्ट्री कंपनी लि०, चीनी ताइपेई से इस उत्पाद की छोटी सी मात्रा का आयात किया है, लेकिन संबद्ध देश में संबद्ध माल के सामान्य मूल्य के बारे में इस आयातक सहित किसी भी इच्छुक पक्षकार द्वारा प्राधिकारी से समक्ष कोई भी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है । अतः प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर पाटन मार्जिन का अनुमान लगाया है ।

### छ.2 सामान्य मूल्य

22. घरेलू उद्योग ने निर्यातक देश के घरेलू बाजार में निम्न तथा मध्यम एनबीआर के कतिपय ग्रेडों की बिक्री कीमत का कतिपय साक्ष्य उपलब्ध कराया है । उन ग्रेडों की तुलना जिनके लिए जानकारी उपलब्ध कराई गई है, और आवेदक द्वारा यथा प्रस्तुत निर्यातक उत्पाद सूची में इंगित ग्रेडों के ब्योरों से इंगित होता है कि मध्यम एनबीआर के 3 ग्रेडों और उच्च एनबीआर के 2 ग्रेडों के संबंध में कीमत संबंधी जानकारी दी गई है । सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इस जानकारी को प्राधिकारी के पास उपलब्ध सर्वोत्तम तथ्यों के रूप में स्वीकार किया गया है ।
23. आयात आंकड़ों के अनुसार एनबीआर की दो किस्मों अर्थात् मध्यम एनबीआर तथा उच्च एनबीआर का जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध देश से निर्यात हुआ है।

अतः सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इन दोनों किस्मों को 'समान उत्पादों' के रूप में लिया गया है। तदनुसार, भारत औसत सामान्य मूल्य का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर मध्यम एनबीआर के लिए \*\*\*\* अम.डा./मी.टन और उच्च एनबीआर के लिए \*\*\*\* अम.डा./मी.टन पर किया गया है।

### छ.3 निर्यात कीमत

24. निर्यात कीमत का निर्धारण सर्वोत्तम उपलब्ध तथ्यों के रूप में डीजीसीआईएस के सौदा आंकड़ों के आधार पर किया गया है। डीजीसीआईएस के सौदेवार आंकड़ों में बताई गई भारत औसत सीआईएफ आयात कीमतों में अंतर्देशीय परिवहन तथा समुद्री भाड़े, बीमा हैंडलिंग तथा कमीशन के लिए उपलब्ध तथ्यों के आधार पर समायोजन किया गया है जिससे कारखानागत कीमत का आकलन किया जा सके। तदनुसार, भारत औसत सामान्य मूल्य का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर मध्यम एनबीआर के लिए \*\*\*\* अम.डा./मी.टन और उच्च एनबीआर के लिए \*\*\*\* अम.डा./मी.टन पर किया गया है।

### छ.4 पाटन मार्जिन

25. निर्यातक देश में अनुमानित सामान्य मूल्य और भारत के लिए निर्यात मूल्य के आधार पर मौजूदा पाटन मार्जिन \*\*\*\* अम.डा./मी.टन अर्थात् निर्यात कीमत का 25% बैठता है।

### छ.5 पाटन जारी रहने की संभावना

26. जांच अवधि के दौरान हुए पाटन की जांच से इंगित होता है कि संबद्ध देश से निर्यातित संबद्ध माल के संबंध में पाटन मार्जिन काफी है हालांकि मात्रा कम है। इच्छुक पक्षकारों ने तर्क दिया है कि संबद्ध देश से एनबीआर की कम उपलब्धता और कच्चे माल की कीमतों में परिवर्तन सहित, अनेक कारकों की वजह से जांच अवधि के बाद परिदृश्य में काफी बदलाव आया है। उन्होंने तर्क दिया है कि उत्पादकों द्वारा आबंटन आधार पर एनबीआर की सप्लाई की जाती है क्योंकि हाल के विगत में पूरे विश्व में क्षमताओं के यौक्तिकीकरण की वजह से विश्व बाजार में

इस उत्पाद की अनुपलब्धता रही है। अतः सप्लाई की ऐसी तंग हालत में पाटन होने का प्रश्न नहीं उठता है।

27. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि संबद्ध देश के उत्पादकों के पास काफी क्षमता मौजूद है जबकि उनके घरेलू बाजार में मांग अपेक्षतया काफी कम है। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सिंथेटिक रबड़ प्रोड्यूसर्स इंक. द्वारा प्रकाशित वर्ल्डवाइड रबड़ स्टेटिस्टिक्स, 2004 का उल्लेख करते हुए घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि चीनी ताइपेई के उत्पादकों की वार्षिक क्षमता लगभग 24000 मी.टन प्रति वर्ष है। इस उत्पाद का लगभग 16000 मी.टन निर्यात करने के बाद इन उत्पादकों के पास बेसिक क्षमता उपलब्ध है जिससे वे एक बार शुल्क समाप्त होने पर भारतीय बाजार में इस उत्पाद का पाटन कर सकें।
28. प्राधिकारी नोट करता है कि आवेदक द्वारा प्रस्तुत बाजार आसूचना रिपोर्ट से इंगित होता है कि इस समय मै0 नेन्टेक्स संबद्ध देश में एनबीआर का एकमात्र उत्पादक है। आवेदक द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों से परिलक्षित होता है कि चीनी ताइपेई विश्व बाजार को संबद्ध माल के लगभग 16000 मी.टन का निर्यात करता है जबकि वह भारत को पूरी जांच अवधि के दौरान लगभग 300 मी.टन प्रति वर्ष का निर्यात करता है जो उसके कुल उत्पादों का लगभग 2% हिस्सा है। किंतु, प्राधिकारी नोट करता है कि इस देश के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क निश्चित राशि आधार पर लगा हुआ था और इसीलिए इस अवधि के दौरान मात्रा तथा कीमतें पाटन जारी रहने की संभावना का एक अच्छा संकेतक नहीं हो सकता है।
29. इच्छुक पक्षकारों ने दावा किया है कि कीमत ढांचे में बदले हुए बाजार गतिशीलता और सप्लाई तथा मांग परिदृश्य के चलते किसी उत्पादक को भारत में इस माल का पाटन करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। हालांकि संभावना परीक्षण में बदली हुई बाजार गतिशीलता को शामिल करना अपेक्षित है ताकि इस बात की जांच की जा सके कि क्या शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन के जारी रहने की संभावना है लेकिन इस संबंध में किसी भी इच्छुक पक्षकार द्वारा कोई ठोस साक्ष्य नहीं दिया गया है।
30. प्राधिकारी नोट करता है कि संबद्ध देश के उत्पादकों की घरेलू बाजार बिक्रियों और भारत के लिए निर्यात कीमत के बीच कीमत अंतर काफी है जबकि शुल्क लागू है। विश्व-व्यापार आंकड़ों से इंगित होता है कि संबद्ध देश से विश्व-बाजार

के लिए संबद्ध माल की निर्यात कीमत तुलनीय अवधियों के लिए भारत के लिए निर्यात कीमत की तुलना में अधिक रही है और कीमत अंतर काफी रहा है ।

31. उपरोक्त तर्कों और उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के बाद प्राधिकारी की राय है कि बदली हुई बाजार गतिशीलता के बावजूद यह निष्कर्ष देना कठिन होगा कि घरेलू बाजार कीमत और भारत के लिए निर्यात कीमत के बीच कीमत अंतर का पूर्णतया अनुमान लगाया जाएगा और इसीलिए यह निर्यात शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटित कीमतों पर संबद्ध देश से भारतीय बाजार को होते रहने की संभावना रहेगी ।

## ज. क्षति का निर्धारण

32. प्राधिकारी नोट करता है कि चूंकि यह पहले से ही लागू पाटनरोधी शुल्क की अंतिम समीक्षा है अतः घरेलू उद्योग को हो रही वास्तविक क्षति के जारी रहने और वास्तविक क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की जांच संबद्ध देश से संबद्ध माल के आयात के संदर्भ में की जानी आवश्यक है ।

### ज.1 क्षति का जारी रहना

33. प्राधिकारी घरेलू उद्योग के उन तर्कों को नोट करता है कि क्षति एवं कारणात्मक संबंध का निर्धारण करना किसी अंतिम समीक्षा जांच में आवश्यक नहीं होता है जैसाकि पहले उल्लिखित मामले में अपीलीय निकाय द्वारा अपनी अंतिम रिपोर्ट में निर्णय दिया गया है । किंतु, क्षति जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से निर्यातित संबद्ध माल के लिए सकारात्मक पाटन मार्जिन साबित हो जाने के बाद प्राधिकारी ने उसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को हुई क्षति, यदि कोई हो, की भी जांच की है । क्षति संबंधी जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग मौजूदा मामले में एकमात्र घरेलू उत्पादक और याचिकाकर्ता कंपनी है ।
34. प्राधिकारी नोट करता है कि एनबीआर का आयात समानांतर जांच में शामिल देशों/क्षेत्रों सहित अनेक देशों से किया जा रहा है । प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि जापान, कोरिया जन.गण., जर्मनी के विरुद्ध निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगा हुआ है और यूरोपीय संघ, ब्राजील तथा मैक्सिको से होने वाले आयातों पर अनंतिम शुल्क लगा हुआ है ।

## ज.2 वास्तविक क्षति

### ज.2.1 इच्छुक पक्षकारों के विचार

35. इच्छुक पक्षकारों ने तर्क दिया है कि अनेक देशों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद याचिकाकर्ता के उत्पादन/उत्पादकता तथा क्षमता उपयोग में काफी सुधार आया है और इसीलिए उन्हें कोई वास्तविक क्षति नहीं हुई है।

### ज.2.2 घरेलू उद्योग के विचार

36. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि जापान, चीनी ताइपेई, जर्मनी तथा कोरिया जन.गण. से होने वाले आयातों पर पाटनरोधी शुल्क संबंधी संरक्षण के बावजूद घरेलू उद्योग को विभिन्न स्रोतों से होने वाले पाटित आयातों की वजह से लगातार क्षति होती रही है। उन्होंने तर्क दिया है कि हालांकि उपरोक्त देशों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क के संरक्षण के परिणामस्वरूप उन्हें अपने निष्पादन में मामूली सुधार करने में सहायता तो मिली है क्योंकि नए स्रोतों से पाटन और शुल्क लगे कतिपय देशों से पाटन के कारण वे इससे ज्यादा लाभ नहीं उठा सके और उन्हें वास्तविक क्षति होनी जारी रही। उन्होंने आगे यह भी निवेदन किया है कि अपनी उत्पादकता में सुधार, उत्पादन की मात्रा और विभिन्न लागत कटौती उपायों की मार्फत उत्पादन लागत में गिरावट के बावजूद वे विभिन्न स्रोतों से हो रहे निरंतर पाटन की वजह से अपनी लागत वसूल करने के लिए लाभकारी कीमत प्राप्त करने में असफल रहे हैं।
37. घरेलू उद्योग ने आगे यह भी तर्क दिया है कि अनुच्छेद 3.4 में सूचीबद्ध मापक न तो अंतिम हैं और न ही इनमें से एक अथवा अधिक कारक आवश्यक रूप से निर्णयात्मक मार्गदर्शक ही हो सकते हैं। अतः यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक क्षति मापक घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को अवश्य परिलक्षित करें। यूरोपीय आयोग के अनेक निर्णयों का उल्लेख करते हुए घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि इसी पद्धति के अनुसार सुधार होने के बाद घरेलू उद्योग के निष्पादन में स्थिति खराब होने का मतलब स्थिति बिगड़ना है बेशक जांच अवधि के मापक आधार वर्ष के मापकों से बेहतर ही क्यों न हों। उन्होंने तर्क दिया है कि हालांकि कुछ मापकों में सुधार तो हुआ है लेकिन इसी ने निर्णय दिया कि समुदाय उद्योग को वास्तविक क्षति हुई।

### ज.2.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

38. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को होने वाली वास्तविक क्षति के संबंध में विभिन्न पक्षकारों द्वारा उठाए गए विभिन्न तर्कों को नोट कर लिया है। प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि संबद्ध देश के अतिरिक्त जापान, कोरिया तथा जर्मनी के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लगा हुआ है और कोरिया तथा जर्मनी के विरुद्ध की गई समीक्षाओं से इन देशों से निरंतर पाटन तथा क्षति होने की पुष्टि हुई है। यूरोपीय संघ, ब्राजील तथा मैक्सिको के संबंध में अपने अंतिम निर्धारण में प्राधिकारी ने इस बात का निर्धारण किया है कि इन देशों से हो रहे आयात भी पाटित कीमतों पर हो रहे हैं। अतः क्षति एवं कारणात्मक संबंध विश्लेषण के प्रयोजनार्थ इन देशों से होने वाले आयातों को भी पाटित आयातों के रूप में माना गया है।
39. पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में इन दोनों के संबंध में उद्देश्यात्मक जांच किए जाने का प्रावधान है अर्थात् (क) पाटित आयातों की मात्रा तथा समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार की कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) पाटित आयातों के मात्रा प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव। प्राधिकारियों से अपेक्षा है कि वह इस बात की जांच करें कि आयातों में या तो संपूर्ण रूप में अथवा आयातक सदस्य देश में उत्पादन तथा खपत के संबंध में इन आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारियों से यह अपेक्षा है कि वे इस बात की जांच करें कि क्या आयातक देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा पर्याप्त कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव के फलस्वरूप काफी सीमा तक अन्यथा कीमत मंदी आ जाएगी अथवा कीमत वृद्धि में रूकावट होगी जो अन्यथा काफी सीमा तक हो गई होती।
40. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध देश से संबद्ध माल के पाटित आयातों की मात्रा तथा कीमत प्रभावों और कीमत तथा लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जांच की है ताकि पाटन तथा क्षति यदि कोई है, के बीच क्षति तथा कारणात्मक संबंधों की मौजूदगी की जांच की जा सके।

(क) मात्रा प्रभाव: पाटित आयातों का मात्रा प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

41. संबद्ध देश से होने वाले पाटित आयातों के मात्रा प्रभावों और अन्य देशों से होने वाले पाटित आयातों के प्रभावों की निम्नानुसार जांच की गई है:-

i) आयात मात्रा तथा संबद्ध देश का हिस्सा:

42. क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस के सौदेवार आंकड़ों और आवेदक द्वारा प्रस्तुत पीपीआर आंकड़ों की जांच की है। किंतु एक आयातक के लिखित निवेदन से डीजीसीआईएस तथा पीपीआर में परिलक्षित मात्रा की तुलना में संबद्ध देश से आयात की अपेक्षतया अधिक मात्रा दर्शाई गई है। निवेदक ने विश्व व्यापार एटलस पर आधारित आंकड़े भी प्रस्तुत किए जो भारत को संबद्ध देश से शामिल उत्पाद के निर्यातों की अधिक मात्रा दर्शाते हैं। अतः चीनी ताइपेई के अधिकारियों से अनुरोध किया गया था कि सहायक सामग्री प्रदान करें और गौण स्रोतों से आवेदक द्वारा प्रस्तुत व्यापार आंकड़ों की पुष्टि करें। चीनी ताइपेई प्राधिकारियों ने अपने सीमाशुल्क आंकड़े प्रस्तुत किए हैं जो आवेदक द्वारा प्रस्तुत विश्व-व्यापार एटलस आंकड़ों और अपने निवेदन में आयातक द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के अनुरूप हैं।

देश	मात्रा मी.टन			
	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04 (जांच अवधि)
चीनी ताइपेई	301.25	340.22	297.71	303.86
प्रवृत्ति	100.00	112.94	98.83	100.87
जांच में शामिल देश(ईयू, ब्राजील, मैक्सिको) एडी शुल्क वाले अन्य	633.16	847.06	1708.51	2343.49
	2278.75	2516.78	2812.29	3844.14
अन्य	0	117.93	216.95	200.02
योग	3213.16	3821.99	5035.46	6691.51
प्रवृत्ति	100	119	157	208



कुल आयातों में ताइपेई का हिस्सा	9%	9%	6%	5%
---------------------------------	----	----	----	----

43. हालांकि आधार वर्ष की तुलना में कुल आयातों में लगभग 108% की वृद्धि हुई है लेकिन संबद्ध देश से हुए आयात कमोबेश स्थिर रहे हैं और संबद्ध माल के कुल आयातों में उसके हिस्से में आधार वर्ष की तुलना में 4% की गिरावट आई है।
44. आयातों में हुई मात्रा वृद्धि का विश्लेषण मांग तथा बाजार हिस्से में वृद्धि के संबंध में किया गया है।

मात्रा:मी.टन

	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
कुल आयात	3213	3822	5035	6692
प्रवृत्ति	100	119	157	208
घरेलू बिक्रियां	****	****	****	****
सूचीकृत	100	114	118	133
कैप्टिव खपत	****	****	****	****
सूचीकृत	100	80	98	101
मांग	****	****	****	****
सूचीकृत	100	114	131	159

45. यह आंकड़े यह दर्शाते हैं कि घरेलू बाजार में संबद्ध माल की मांग में अच्छी वृद्धि हुई है जबकि इस उत्पाद की कुल मांग में आधार वर्ष की तुलना में 59% की वृद्धि दर्शाई गई है लेकिन संबद्ध देश से हुए आयात क्षति जांच-अवधि के दौरान कमोबेश वही रहे।

ii) मांग, उत्पादन तथा बाजार हिस्सा

क) घरेलू उद्योग का उत्पादन

मात्रा:मी.टन

क्षमता और उत्पादन	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
प्रतिस्थापित क्षमता	6,250	8,350	8,800	8,800

सूचीकृत	100	134	141	141
कुल उत्पादन	****	****	****	****
सूचीकृत	100	130	130	149
क्षमता उपयोग-%	****	****	****	****
सूचीकृत	100	97	92	106

46. प्राधिकारी नोट करता है कि वर्ष 2001-02 में काफी क्षमता वृद्धि रही है और उसके बाद मौजूदा क्षमता में मुख्य रूप से अवरोध समाप्त होने के कारण घरेलू बाजार में इस उत्पाद की अच्छी मांग के परिदृश्य में वृद्धि हुई। यह आंकड़े यह भी दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष की तुलना में अपने उत्पादन में सुधार किया है। क्षमता उपयोग में भी सुधार हुआ है।

#### ख) घरेलू उद्योग की बिक्रियां

मात्रा: मी.टन

विवरण	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04 (जांच अवधि)
प्रारंभिक स्टॉक	****	****	****	****
सूचीकृत	100	42	145	136
उत्पादन (एनबीआर गांठें)	****	****	****	****
सूचीकृत	100	123	121	137
घरेलू बिक्री	****	****	****	****
सूचीकृत	100	114	118	133
निर्यात बिक्री	****	****	****	****
सूचीकृत	100	136	138	179
कैप्टिव खपत	****	****	****	****
सूचीकृत	100	80	98	101
अंतिम स्टॉक	****	****	****	****
सूचीकृत	100	341	315	354

47. उपरोक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि हालांकि उत्पादन में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 37% की वृद्धि और उससे पिछले वर्ष की तुलना में 16% की वृद्धि हुई है लेकिन घरेलू बिक्रियों में तदनुरूपी वर्षों के दौरान यह वृद्धि 33% तथा 15% की रही है। इन आंकड़ों से पता चलता है कि माल सूची में काफी वृद्धि हुई है क्योंकि अंतिम स्टॉक में 254% की वृद्धि रही। बिक्रियों में प्रमुख वृद्धि निर्यात खंड में रही है हालांकि मात्रा कम रही है।

ख) मांग तथा बाजार हिस्सा

विवरण	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
संबद्ध देशों से आयात	301.25	340.22	297.71	303.86
सूचीकृत	100	112	111	101
अन्य देशों से आयात	2911.91	3481.77	4737.75	6387.65
सूचीकृत	100	119.57	162.70	219.3
कुल आयात	3209.71	3818.60	5029.23	6692.07
प्रवृत्ति	100	126	166	208
कुल घरेलू बिक्रियां	****	****	****	****
सूचीकृत	100	114	118	133
कैप्टिव खपत	****	****	****	****
कुल घरेलू मांग	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	114	131	159
मांग में हिस्सा (सूचीकृत)				
घरेलू उद्योग	100	101	90	83
संबद्ध देश	100	99	75	63
अन्य	100	105	124	138
कैप्टिव खपत	100	71	74	64
मांग में आयातों का कुल हिस्सा	100	105	119	131

48. हालांकि विचाराधीन उत्पाद की घरेलू मांग में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 59% की वृद्धि तो हुई लेकिन कुल मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा उसी अवधि के दौरान 54% से घटकर 45% रह गया। साथ ही, संबद्ध देश से पाटित आयातों का हिस्सा 3.58% से घटकर 2.26 रह गया जबकि शुल्क लगे देशों से पाटित आयातों सहित अन्य स्रोतों से हुए आयातों का हिस्सा लगभग 13% तक बढ़ गया।

**(ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव**

49. संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम दाम पर बिक्री कीमत, कीमत दबाव तथा कीमत मंदी, यदि कोई हो के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री वसूली (एनएसआर) और अक्षतिकारी कीमत (एनआईपी) (जिसकी गणना घरेलू उद्योग की लागत निर्धारण जानकारी को सामान्यकृत करके की गई) की तुलना संबद्ध देशों से हुए आयातों की लैंडेड लागत से की गई है।

**(i) कीमत कटौती तथा कम दाम पर बिक्री के प्रभाव**

विवरण		2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
उत्पादन लागत	रु./मी.टन	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	85.73	90.59	90.96
बिक्री कीमत	रु./मी.टन	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	99	92	96
लैंडेड कीमत					
संबद्ध देश	रु./मी.टन	78980	84420	84200	75130
सूचीकृत		100	106.89	106.61	92.38
ड्यूटी इन फोर्स	रु./मी.टन	6288	6288	6288	6288
एडी ड्यूटी पेड		85268	90708	90488	81418
कीमत कटौती					
संबद्ध देश	रु./मी.टन	****	****	****	****
पाटनरोधी शुल्क के बिना					
	%				0-10%

एनआईपी	रु./मी.टन				****
कम कीमत पर बिक्री					
संबद्ध देश	रु./मी.टन				****
संबद्ध देश	%				5-15%

50. घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत (निवल बिक्री वसूली) आधार वर्ष की तुलना में महत्वपूर्ण कमी को दर्शाती है जबकि 2001-02 की बिक्री लागत में कमी आने के बावजूद इसमें एक बढ़ती हुई प्रवृत्ति देखने को मिली है। उसी समय में संबद्ध देशों से हुए आयातों के पहुंच मूल्य में आधार वर्ष की तुलना में महत्वपूर्ण कमी प्रदर्शित होती है।
51. संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों की कीमत कटौती से पड़े प्रभावों का निर्धारण, समूची जांच अवधि में संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों की भारित औसत पहुंच मूल्य की तुलना उसी समय में घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री वसूली के साथ करके किया गया है। इस प्रयोजनार्थ आयातों की पहुंच मूल्य की गणना संबद्ध देश से हुए आयातों के सीआईएफ मूल्य में एक प्रतिशत हैंडलिंग प्रभार और लागू सीमा शुल्क जोड़कर की गई है।
52. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली का निर्धारण करते हुए घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त छूट, बट्टा छूट एवं कमीशन और प्रदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क पर छूट दी गई है।
53. कम कीमत पर हुई बिक्री का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ संबद्ध देशों/क्षेत्रों से हुए भारित औसत पहुंच कीमत की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षति-रहित बिक्री कीमत के साथ की गई है।
54. प्राधिकारी नोट करता है कि संबद्ध देश से हुए आयातों से घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली और साथ ही घरेलू उद्योग के लिए अनुमानित क्षति रहित कीमत में महत्वपूर्ण कमी आई है जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्रियाँ हुई हैं। तथापि, संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु की पाटनरोधी शुल्क प्रदत्त उत्तराई मूल्य से नकारात्मक कीमत कटौती इंगित होती है।

प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री कीमत में पर्याप्त कमी आई है जो संबद्ध देश को शामिल करते हुए विभिन्न स्रोतों से हुए पाटित आयातों में पर्याप्त कीमत कमी को दर्शाती है। इसलिए, कीमत कटौती का विश्लेषण संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों पर पड़े कीमत प्रभावों का एक पूर्ण संकेतक नहीं है।

(ii) पाटित आयातों पर कीमत ह्रास तथा दबाव के प्रभाव:

55. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों की मात्रा एवं हिस्सा, घरेलू उद्योग की कीमतों में पर्याप्त कमी या ह्रास जाने के लिए काफी कम है लेकिन क्षति अवधि के दौरान घरेलू बिक्री कीमतों में कमी विभिन्न स्रोत, जिसमें संबद्ध देश शामिल हैं, से हुए पाटित आयातों को देखते हुए पर्याप्त हैं।

#### ज.4 अन्य क्षति मापदण्डों की जांच

56. घरेलू उद्योग की मात्रा और कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और बड़े क्षति कारकों जैसे आयात की मात्रा एवं मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोगिता एवं बिक्री और साथ ही विभिन्न खण्डों के बाजार हिस्से से मांग की तुलना और अन्य आर्थिक मापदण्ड, जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दर्शाते हैं, की जांच करने के पश्चात् प्राधिकारी निम्नानुसार विश्लेषण करते हैं-

##### i) उत्पादकता पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

विवरण	यूनिट	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04 (जांच- अवधि)
उत्पादकता	प्रति कर्मचारी	****	****	****	****
सूचीबद्ध		100	124.18	124.35	145.99
उत्पादकता	मी.टन/दिन	****	****	****	****
सूचीबद्ध		100	123.21	120.54	136.89

57. घरेलू उद्योग की उत्पादकता को उत्पादन पर आने वाली मजदूरी के अनुपात में मापा गया है और प्रतिदिन उत्पादन में पर्याप्त सुधार हुआ है।

## ii) लाभ एवं नकद प्रवाह पर वास्तविक एवं संभाव्य प्रभाव

58. घरेलू उद्योग के अपने घरेलू प्रचालनों से हुए प्राप्त कुल राजस्व एवं नकदी प्रवाह में मामूली वृद्धि देखने को मिलती है जो घरेलू बिक्रियों में हुई वृद्धि के कारण है। तथापि, वर्ष 2001-02 के दौरान अपनी लाभप्रदता में सुधार आने के पश्चात घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है और जांच अवधि के दौरान प्रति यूनिट वसूली में आई कमी के कारण इसमें कमी आना जारी है।

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
<b>लाभ</b>					
बिक्री लागत	रु./मी.टन	****	****	****	****
सूचीकृत		100	85.73	90.60	90.96
बिक्री कीमत	रु./मी.टन	****	****	****	****
सूचीकृत		100	98.85	92.47	95.58
लाभ/हानि	रु./मी.टन	(****)	****	(****)	(****)
सूचीकृत		( 100)	48.49	( 71.45)	(43.64)
घरेलू बिक्रियों पर कुल लाभ/हानि	लाख रु०	(****)	****	(****)	(****)
सूचीकृत		100	55.46	(84.58)	(58.04)
मूल्य ह्रास	लाख रु.	****	****	****	****
सूचीकृत		100	100.09	96.49	98.37
एनबीआर से नकद लाभ/हानि	लाख रु.	(****)	****	(****)	****
सूचीकृत		( 100)	325.69	( 63.89)	( 12.01)

## iii) रोजगार तथा मजदूरियां

59. रोजगार स्तर में मामूली गिरावट आई है। लेकिन वेतन तथा मजदूरियों के कारण व्यय में लगभग 20% की वृद्धि रही है। किंतु, वेतन तथा मजदूरी के संबंध में व्यय में वृद्धि तुलनीय अवधियों के दौरान उत्पादन में वृद्धि से कम ज्यादा रही है।

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
रोजगार					
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	104.51	104.51	102.26
मजदूरी	लाख रु.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	107.94	113.79	120.15
प्रति कर्मचारी मजदूरी	लाख रु.	****	****	****	****
प्रवृत्ति	सूचीकृत	100	103.28	108.88	117.50

iv) पूंजी निवेश पर आय और पूंजी लेने की सामर्थ्य

60. घरेलू उद्योग के वित्तीय कार्य-निष्पादन का भी उसके नकद प्रवाह तथा पूंजी पर आय के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है। इच्छुक पक्षकारों ने तर्क दिया है कि कंपनी के समग्र कार्य-निष्पादन में सुधार हुआ है। किंतु प्राधिकारी नोट करता है कि हालांकि कंपनी का समग्र कार्य-निष्पादन अच्छा है लेकिन उसके एनबीआर प्रचालन से उसके लाभ में वर्ष 2001-02 में लाभ दिखाने के बाद कार्य-निष्पादन की स्थिति बिगड़ गई है। घरेलू उद्योग द्वारा लगाई गई पूंजी पर आय आधार वर्ष और पिछले वर्षों की तुलना में स्थिति बिगड़ गई।

लाख रु.

विवरण	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04 जांच अवधि
लगाई गई पूंजी- एनएफए + क्रियाशील पूंजी	****	****	****	****
सूचीकृत	100	96.33	101.84	100.52
लाभ	(****)	****	(****)	(****)



सूचीकृत	( 100.00)	( 55.46)	( 84.58)	( 58.05)
ब्याज	****	****	****	****
सूचीकृत	100.00	120.79	106.48	75.78
पीबीआईटी	****	****	****	****
सूचीकृत	100.00	445.27	146.79	108.42
लगाई गई पूंजी पर आय-एनएफए + क्रियाशील पूंजी	****	****	****	****
सूचीकृत	100	462.23	144.14	107.86

#### v) पूंजी निवेश

61. प्राधिकारी नोट करता है कि घरेलू उद्योग ने लगभग \*\*\* करोड़ रुपये की पूंजी निवेश से अपनी मौजूदा क्षमता के अवरोध समाप्त करके अपनी क्षमता 6250 मी.टन से बढ़ाकर 8800 मी.टन कर ली है। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा और आगे कोई नया पूंजी निवेश नहीं किया गया है और जैसाकि उन्होंने निवेदन किया है, उनकी आगे और कोई पूंजी निवेश करने की योजना नहीं है।

#### vi) पाटन की मात्रा

62. जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से पाटन का अनुमानित मार्जिन पर्याप्त है।

#### vii) कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक:

63. प्राधिकारी नोट करता है कि विश्व बाजार में मुख्य कच्ची सामग्रियों की कीमतों में पर्याप्त वृद्धि हुई है जिससे क्षति अवधि की तुलना में वर्ष 2001-01 में भारी गिरावट आने के बाद घरेलू उद्योग के लिए संबद्ध वस्तुओं की उत्पादन लागत प्रभावित होती है। जांच अवधि में घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली में मामूली वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग की बिक्री वसूली उत्पादन बनाने और उसकी बिक्री करने की पूरी लागत नहीं निकाल सकी है।

64. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि इस उत्पाद का कोई व्यवहार्य स्थानापन्न नहीं है और मैसर्स अपार उद्योग भारत में संबद्ध वस्तु का एक मात्र उत्पादक है। इसलिए, घरेलू प्रतिस्पर्धा कीमतों को प्रभावित नहीं करती है।
65. प्राधिकारी नोट करता है कि संबद्ध वस्तु का पाटित आयात संबद्ध देश सहित कई देशों से भारतीय बाजार में आया है और यूरोपीय संघ, ब्राजील और मैक्सिको के सदस्यों सहित कई देशों में जांच चल रही है। इन देशों से हुए आयातों की मात्रा पर्याप्त है और जांच अवधि के दौरान इन स्रोतों से हुए आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों पर काफी न्यूनकारी एवं ह्रास का प्रभाव पड़ा है।

### viii) मालसूची

विवरण	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
मालसूची -अवधि के अंत में	मी.टन	****	****	****	****
सूचीकृत		100	341	315	213
उत्पादन के % के रूप में मालसूची	सूचीकृत	100	278.02	263.87	259.33

66. घरेलू उद्योग के माल सूची से संबंधित आंकड़े पर्याप्त मात्रा में रखे माल को दर्शाते हैं और घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा अपने उत्पाद को न उतार पाने में उनकी अक्षमता को दर्शाते हैं।

### ज.5 अन्य ज्ञात कारक तथा कारणात्मक संबंध

67. इच्छुक पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि पाटित आयात क्षति के लिए जिम्मेदार नहीं हैं, यदि कोई है, तो इससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। उन्होंने यह तर्क दिया है कि क्षति, यदि कोई हुई है, घरेलू उद्योग की अकिफायती प्लांट का आकार और उसकी अक्षमता के कारण हुई है और इसे संबद्ध देश/क्षेत्र से हुए पाटित आयातों को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है। उन्होंने आगे यह तर्क दिया है कि प्लांट की सीमित क्षमता के कारण ही आवेदक घरेलू मांग की अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम नहीं रहा है। उपभोज्य उद्योग ने यह तर्क दिया

है कि विगत एक वर्ष में लागत और कीमतों के परिदृश्य में पूर्णतः बदलाव आए हैं। हालांकि उपलब्धता काफी कम है और सामग्री की आपूर्ति आबंटन आधार पर की जाती है, पाटन असंगत है क्योंकि कीमतों में उर्ध्वगामी संचालन जारी रहा है।

68. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि संबद्ध देश से हुए पाटित आयातों की मात्रा आधार वर्ष में कम या ज्यादा एक-समान रही है और यह कुल घरेलू मांग का लगभग 2.26% बैठती है, जो इस तथ्य को जानते हुए है कि संबद्ध देश से आने वाले उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क लागू है। इसलिए, ऐसी स्थिति में जहां निर्यातक पर्याप्त मात्रा में निर्यात करना जारी रखता है, पाटनरोधी शुल्क के बावजूद यह प्रणाली अपनाई जाती है कि मात्रा में अधिक से अधिक वृद्धि शुल्क के प्रतिसंहरण के साथ-साथ की जाती है। घरेलू उद्योग आगे यह तर्क देते हैं कि यह एक निर्णायक समीक्षा होने के कारण प्रभावित मात्रा की जांच और कारणात्मकता के मानक अलग-अलग हैं। यह तर्क दिया गया है कि जब कभी आयात की मात्रा शून्य रही है, अन्य देशों द्वारा पाटनरोधी शुल्क लगाए गए हैं और कुछेक क्षेत्राधिकारों में 1% बाजार हिस्से को घरेलू उद्योग की क्षति का काफी बड़ा कारण माना गया है। इसलिए 2.26% के बाजार हिस्से को क्षति का कारण होने के लिए अपर्याप्त रूप में अनदेखा नहीं किया जा सकता है।
69. इस संबंध में अंतिम समीक्षा में जांच के लिए समीक्षा के मानकों पर विभिन्न चयनक तथा अपीलीय निकाय के निर्णयों और अनुच्छेद 3(अनुच्छेद 3.5-कारणात्मक संबंध सहित) की व्यावहारिकता की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। यह तर्क दिया गया है कि अमरीका-अर्जेंटीना से ऑयल कंट्री ट्यूबूलर गुड्स पर पाटनरोधी उपायों की अंतिम समीक्षा में अपीलीय निकाय ने उसी तरीके से चयनक परिणाम को खारिज कर दिया कि पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3 में निर्धारित दायित्व अंतिम समीक्षा में क्षति की संभावना के निर्धारण पर लागू नहीं होता है। अपीलय निकाय ने यह भी निर्णय दिया था कि पाटनरोधी करार में जांच प्राधिकारियों को इस बात की मनाही नहीं है कि वह क्षति की संभावना के निर्धारण के दौरान संभाव्य पाटित आयातों के प्रभाव का संचयन करें। यह भी निर्णय है कि पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.3 की शर्तें अंतिम समीक्षा के संदर्भ में लागू नहीं होती हैं।
70. उपरोक्त तर्कों और अपीलीय निकाय के ऐसे स्वीकृत विचार के होते हुए भी कि किसी अंतिम समीक्षा में पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3 के तहत क्षति तथा

कारणात्मक संबंधों की जांच आवश्यक नहीं है, प्राधिकारी ने क्षति और मौजूदा क्षति तथा संबद्ध देश से होने वाले पाटित आयातों के बीच कारणात्मक संबंध और क्षति की संभावना की साथ-साथ जांच की है।

**i) अन्य स्रोतों से हुए आयातों की मात्रा तथा कीमतें**

71. अनुच्छेद 3.5 के अनुसार अश्रेयस्कर विश्लेषण के लिए एक कारक के रूप में पाटित कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा तथा मूल्य की जांच आवश्यक है। प्राधिकारी नोट करता है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश को छोड़कर जापान, कोरिया, यूरोपीय संघ, ब्राजील तथा मैक्सिको सहित अनेक अन्य देशों से आयात हुए हैं। भारतीय बाजार में गैर-पाटित कीमतों पर आ रहे माल की मात्रा ज्यादा नहीं है क्योंकि सभी स्रोतों से पाटित आयातों का हिस्सा कुल आयातों के 3% से भी कम है। हालांकि जापान तथा कोरिया सहित कुछ देशों पर जांच अवधि के दौरान पाटनरोधी शुल्क लगा हुआ था लेकिन उपरोक्त अन्य देशों से आयात काफी मात्रा में हो रहे थे। इन स्रोतों से होने वाले आयात पाटित कीमतों पर हुए पाए गए हैं और उनसे घरेलू उद्योग में काफी कीमत कटौती हुई।

**ii) मांग में कमी और/अथवा खपत के पैटर्न में बदलाव**

72. विचाराधीन उत्पाद की कुल घरेलू मांग में जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष की तुलना में लगभग 59% की काफी बड़ी वृद्धि दर्शाई गई है। घरेलू बाजार में इस उत्पाद के खपत पैटर्न में ऐसा कोई ज्यादा बदलाव नहीं आया है जोकि घरेलू उद्योग को हो रही क्षति का कारण बन सके।

**iii) व्यापार की प्रतिबंधात्मक पद्धतियां और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा**

73. इच्छुक पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि एकमात्र घरेलू उत्पादक पाटनरोधी शुल्क लगाकर प्रतिस्पर्धा रोकते हुए एकाधिकार का बाजार तैयार करने का प्रयास कर रहा है। प्राधिकारी नोट करता है कि संबद्ध माल का आयात मुक्त रूप से हो सकता है और घरेलू बाजार में इसकी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां नहीं हैं। मै0 अपार इंडस्ट्रीज लिमिटेड ही देश में संबद्ध माल का एकमात्र उत्पादक है। देश में उचित व्यापार पर कोई प्रतिबंध नहीं लगा हुआ है और विभिन्न देशों से संबद्ध

माल का आयात होता है और वह घरेलू उत्पादक के साथ प्रतिस्पर्धा करता है । किंतु, विभिन्न स्रोतों से हो रहे आयात का प्रमुख भाग या तो पाटित आयातों के रूप में निर्धारित किया गया है अथवा वह पाटन के आरोप के संबंध में जांच के अधीन होता है ।

#### iv) प्रौद्योगिकी का विकास तथा निर्यात निष्पादन

74. इच्छुक पक्षकारों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग का अकुशल संयंत्र आकार उसे हो रही क्षति का एक कारण हो सकता है । विभिन्न देशों में सहयोगकारी विदेशी उत्पादक की उत्पादन सुविधाओं की भी प्राधिकारी द्वारा विभिन्न जांचों के दौरान पड़ताल की गई और यह देखा गया कि वे उत्पादक उसी तरह ही उत्पादन प्रौद्योगिकी को लागू करते हैं । वास्तव में, विश्व के अधिकांश उत्पादक गुडइयर जैसे प्रौद्योगिकी की अग्रणी संस्थाओं द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हैं । इनमें से कुछ उत्पादकों की उत्पादन क्षमता तथा मात्रा भारत के घरेलू उत्पादक की क्षमता से ज्यादा भिन्न नहीं है । अतः घरेलू उद्योग की अकुशल क्षमता अथवा प्रौद्योगिकी विकास अथवा उत्पादन की अकुशल पद्धति के तर्क को घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का एक कारण नहीं माना जा सकता ।
75. प्राधिकारी नोट करता है कि घरेलू उद्योग का विचाराधीन उत्पाद का बहुत ही छोटा निर्यात कारोबार होता है, हालांकि इसने जांच अवधि के दौरान सतत वृद्धि दर्शाई है । अतः घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन बहुत ही कम है और इससे घरेलू उद्योग के निष्पादन पर जारी प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है । अतः निर्यात निष्पादन को घरेलू उद्योग को हो रही क्षति का एक कारण नहीं माना जा सकता है ।

#### v) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

76. श्रमिक उत्पादन तथा दैनिक उत्पादन की दृष्टि से घरेलू उद्योग की उत्पादकता में काफी सुधार दर्शाया गया है । अतः उत्पादकता एक ऐसा कारक नहीं है जो घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का कारण बन सके । वास्तव में, घरेलू उद्योग ने अपनी उत्पादकता में सुधार करते हुए अपने घरेलू प्रचालन में होने वाली हानि को कम करने का प्रयास किया है ।

## झ. क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

### झ.1 घरेलू उद्योग के विचार:

77. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति की जांच अंतिम समीक्षा के तहत अपेक्षाओं के संदर्भ में करना जरूरी है और न कि आशंका विश्लेषण के लिए निर्धारित कारकों के आधार पर। उन्होंने अन्य बातों के साथ-साथ तर्क दिया है कि:

- घरेलू उद्योग को संबद्ध देश सहित अनेक देशों से हो रहे पाटित आयातों के फलस्वरूप पहले से ही हानि हो रही है;
- संबद्ध देश से हो रहे आयातों की वजह से घरेलू कीमतों में अब भी कटौती हो रही है और यदि मौजूदा शुल्क हटा दिए जाते हैं तो ऐसी स्थिति में कीमत कटौती में वृद्धि होगी;
- कि संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि होगी;
- संबद्ध देश में उत्पादन क्षमता उनकी घरेलू मांग से बहुत अधिक है और संबद्ध देश में अत्यधिक उपयुक्त क्षमता है;
- पिछले 2-4 वर्षों के दौरान संबद्ध देश से निर्यात में कमी आयी है जिससे यह संकेत मिलता है कि जिस क्षण पाटनरोधी शुल्क हटाया जाता है तो बड़े प्रेषण सन्निकट होंगे क्योंकि संबद्ध देश में काफी अतिरिक्त क्षमता है और इस बात का खतरा है कि इस अप्रयुक्त क्षमता के एक बड़े हिस्से का प्रयोग भारतीय बाजार को भरने के लिए किया जाएगा;
- कि मौजूदा शुल्क को हटाने के परिणामस्वरूप और अधिक कीमत ह्रास होगा और घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में और अधिक कमी होगी;
- कि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए मौजूदा शुल्क अपर्याप्त है;
- कि संबद्ध देश से उत्पादक और निर्यातक दूसरे देशों में भी समान कीमतों पर संबद्ध वस्तुओं का पाटन कर रहे हैं। वास्तव में जिस कीमत पर वस्तुएं अन्य देशों को निर्यात की जाती हैं, वह उस कीमत से कम है जिस पर इसका भारत को निर्यात किया जा रहा है। इसलिए भारत संबद्ध देश के निर्यातकों के लिए एक आकर्षक बाजार बना हुआ है और यदि शुल्क हटाया जाता है तो भारतीय बाजार में पाटन में और अधिक वृद्धि होगी;
- कि लागू शुल्क के कारण संबद्ध देश से पाटित आयातों के बाजार हिस्से में कमी आई है जिससे भारत को होने वाले पाटित आयात प्रतिबंधित हुए हैं;
- कि जिस कीमत पर माल का निर्यात किया जा रहा है उससे विश्व भर में किसी उत्पादक की उत्पादन लागत की वसूली नहीं हो सकती है;

78. संक्षेप में घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होना जारी है और इस बात की पक्की संभावना है कि यदि शुल्क हटाया जाता है तो क्षति जारी रहेगी अथवा इसकी पुनरावृत्ति होगी ।
79. प्रकटीकरण के बाद की अपनी टिप्पणियों में घरेलू उद्योग ने आगे यह तर्क दिया है कि क्षति हेतु संभावना संबंधी जांच पाटित आयातों के विभिन्न मानदंडों पर वास्तविक और संभावित प्रभावों पर आधारित होनी चाहिए न कि खतरे के मानदंडों पर, जैसाकि प्राधिकारी द्वारा प्रस्ताव किया गया है । उन्होंने तर्क दिया है कि जब शुल्क लागू नहीं होते हैं तो संबद्ध देश में निर्यातकों के विश्व के विभिन्न बाजारों में निर्यात क्रियाकलाप घरेलू उद्योग की संवेदनशीलता, मौजूदा उपायों के साथ विदेशी उत्पादकों का बाजार हिस्सा आदि से संबंधित मानदंडों के संदर्भ में किसी संभावित स्थिति की जांच करना अपेक्षित है । उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि ताइवान के निर्यातक मौजूदा पाटनरोधी शुल्कों के कारण अधिक मात्रा में निर्यात नहीं कर रहे हैं और इसे हटा लिया जाता है तो इन मात्राओं में वृद्धि होने की पक्की संभावना है । इसके अलावा संबद्ध देश से पाटन जारी रहने से इस बात की स्पष्ट तौर पर पुष्टि हुई कि पाटन के जारी रहने की संभावना है और बल्कि शुल्क हटाने की स्थिति में पाटन में और अधिक वृद्धि होगी और इसके परिणामस्वरूप और अधिक कीमत कटौती हागी ।
80. यह भी तर्क दिया गया है कि ताइवान के निर्यातकों की उत्पादन क्षमता उनकी मांग से काफी अधिक है । इस क्षमता के अलावा इस बात की कि ताइवान से निर्यातक चीन में एक विशाल संयंत्र स्थापित कर रहा है, का साफ तौर पर यह अर्थ हुआ कि इसके एक प्रमुख बाजार अर्थात् चीन को इसके निर्यातों में कमी आएगी । ऐसे परिदृश्य में निर्यातक के पास विशाल अप्रयुक्त क्षमता होगी जिसका स्थान भारतीय बाजार होगा । यह भी तर्क दिया गया है कि ताइवान, इस उत्पाद को बड़ी मात्रा में हांगकांग को निर्यात करता है जिसके पास इस उत्पाद की पर्याप्त घरेलू खपत नहीं है इसलिए इस उत्पाद का हांगकांग से यानांतरण किए जाने की संभावना है ।

## झ.2 इच्छुक पक्षकारों के विचार

81. आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि विश्व भर में क्षमताओं के उचित अनुपात के कारण आपूर्ति पर नियंत्रण है और अब माल की आपूर्ति केवल विदेशी उत्पादकों द्वारा आबंटन आधार पर की जाती है । इसलिए मांग और आपूर्ति के बदले हुए परिदृश्य में और इस स्वरूप के किसी विक्रेता बाजार में पाटन होने की मुश्किल से कोई

संभावना है। हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि जांच अवधि के दौरान चीनी ताइपेई से केवल विशिष्ट उत्पादन के लिए बहुत कम मात्राओं का आयात किया गया है। उन्होंने तर्क दिया है कि जांच अवधि के बाद के कीमत संबंधी घटनाक्रमों पर भी विचार किया जाना चाहिए क्योंकि पेट्रोलियम आधारित कच्ची सामग्री की कीमतों में वृद्धि होने के कारण विश्व बाजार में मौजूदा कीमतों में अत्यधिक बढ़ोतरी हुई है। इसलिए संबद्ध देश पर शुल्क के जारी रखने की आवश्यकता नहीं है।

### झ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

82. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि निर्णायक समीक्षा के अंतर्गत अपेक्षा इस बात की जांच करने की है कि क्या पाटनरोधी शुल्क को हटाने से घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने अथवा इसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है और इसलिए खतरे के विश्लेषण के लिए सूचीबद्ध कारकों पर आधारित कोई जांच दोषपूर्ण होगी। यद्यपि घरेलू उद्योग के तर्क इस सीमा तक वैध हैं कि संभावना संबंधी कोई जांच केवल खतरे के आभास पर ही आधारित नहीं होनी चाहिए क्योंकि कई कारकों हाते हैं जो इस बात का पता लगाने के लिए कि शुल्क हटाने की स्थिति में क्या हो सकता है, जांच की जाने वाली स्थिति के लिए अद्वितीय हो सकते हैं। इसलिए प्राधिकारी के ध्यान में लाए गए सभी कारकों की यह पता लगाने के लिए जांच की गई है कि क्या शुल्क हटा लिए जाने की स्थिति में क्षति के जारी रहने की संभावना है। इस संबंध में निम्नलिखित कारकों की जांच की गई है:

(क) संबद्ध देश और अन्य स्रोतों से पाटित आयातों में वृद्धि की दर

मात्रा मी.टन में

	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04 (जांच अवधि)
चीनी ताइपेई	301.25	340.22	297.71	303.86
प्रवृत्ति	100.00	112.94	98.83	100.87
कुल आयात	3213.16	3821.99	5035.46	6691.51
प्रवृत्ति	100	119	157	208

83. यह देखा गया है कि संबद्ध देश से पाटित आयात उस अवधि के दौरान जिसमें शुल्क लागू था, 300 मी.टन प्रतिवर्ष की दर पर लगभग स्थिर रहे हैं, जबकि इसी अवधि में कुल आयात दोगुना से भी अधिक हो गए हैं। विभिन्न स्रोतों से आयातों के कीमत स्तरों



से बहुत अधिक परिवर्तन का संकेत नहीं मिलता है। आयातों के संग्रहन से इस बात का भी संकेत मिलता है कि कोरिया गणराज्य जैसे कुछ देशों के विरुद्ध लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद इसी अवधि के दौरान पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई है जबकि संबद्ध देश से पाटित आयात लगभग स्थिर रहे हैं जिससे यह संकेत मिलता है कि शुल्क से बाजार के एक भाग पर प्रभाव नहीं पड़ा है जो आयात करना जारी रखे हुए हैं जबकि बाजार के अन्य भागों ने लागू शुल्क के कारण संबद्ध देश से वस्तुओं का आयात कराना बंद कर दिया है। इसलिए शुल्क को हटा लिए जाने की स्थिति में पाटित आयातों की मात्रा में वृद्धि होने की संभावना है।

(ख) निपटान योग्य क्षमता और भारत को संभावित निर्यात

84. विश्वव्यापी रबड़ आंकड़े, 2004 (अंतर्राष्ट्रीय सिंथेटिक रबड़ उत्पादक इंक संस्थान) और केमिकल्स इकॉनोमिक्स हैंडबुक से नाइट्राइल की कुल उत्पादन क्षमता का संकेत मिलता है - 16000 मी.टन (लेटेक्स का 24000 मी.टन) के रूप में चीनी ताइपेई में केमिकल्स इकॉनोमिक्स हैंडबुक (सीईएच) के अनुसार चीनी ताइपेई प्रतिवर्ष सख्त नाइट्राइल रबड़ का लगभग 9500 मी.टन आयात और लगभग 16000 मी.टन निर्यात करता है। अतिरिक्त क्षमता अधिकांशतः विभिन्न देशों को किए जाने वाले निर्यातों के लिए होती है।
85. विश्व व्यापार आंकड़ों से संकेत मिलता है कि इस देश से नाइट्राइल रबड़ के प्रमुख आयातक चीन जन.गण., हांगकांग, अमरीका और जापान हैं जो चीनी ताइपेई से कुल निर्यातों (16000 मी.टन) के लगभग 85% हिस्से का आयात करते हैं। भारत का हिस्सा इस देश से संबद्ध वस्तुओं के कुल निर्यातों के 2% से भी कम बनता है। यह स्पष्ट है कि ताइवान में निर्यातकों की उत्पादन क्षमता उनकी घरेलू मांग से काफी अधिक है।
86. प्राधिकारी के ध्यान में यह बात लायी गई है कि चीनी ताइपेई का उत्पादन चीन में एक विशाल संयंत्र स्थापित कर रहा है जिसका अर्थ यह हुआ कि इसके एक प्रमुख बाजार अर्थात् चीन को इसके निर्यातों में कमी आएगी। ऐसे परिदृश्यों में निर्यातक के पास विशाल अप्रयुक्त क्षमता होगी जिसका स्थान भारतीय बाजार होगा। यह भी नोट किया गया है कि ताइवान इस उत्पाद का बड़ी मात्राओं में हांगकांग को निर्यात करता है जहां इस उत्पाद की पर्याप्त घरेलू खपत नहीं है। इसलिए इस उत्पाद की भी हांगकांग से भारत सहित अन्य देशों को यानांतरण किए जाने की संभावना है।

## (ग) कीमतों पर संभावित प्रभावः

87. इस उत्पाद की कीमत प्रवृत्ति को दर्शाने वाले विश्व व्यापार एटलस आंकड़ों से यह संकेत मिलता है कि यद्यपि चीनी ताइपेई से विश्व बाजार को संबद्ध वस्तुओं की औसत निर्यात कीमत लगभग 1.30 अम.डालर प्रति किग्रा. है लेकिन भारत को निर्यात कीमत 1.24 अम. डालर प्रति मी.टन है। इसके साथ-साथ संबद्ध देश से आयातों का पाटनरोधी शुल्क प्रदत्त पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली से मामूली रूप से अधिक है जिससे यह संकेत मिलता है कि जिन मौजूदा कीमतों पर संबद्ध देश से वस्तुएं भारतीय बाजार में प्रवेश कर रही हैं, उनका घरेलू कीमतों पर मामूली नकारात्मक कीमत प्रभाव पड़ता है। तथापि प्राधिकारी नोट करता है कि सभी पाटित स्रोतों से पाटित आयातों पर घरेलू उद्योग पर अत्यधिक कीमत ह्रासकारी प्रभाव पड़ा है। इसलिए, शुल्क को हटा लिए जाने की स्थिति में संबद्ध देश से आयातों के पहुंच मूल्य का घरेलू उद्योग पर कीमत संबंधी अत्यधिक प्रभाव पड़ने की संभावना है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को और अधिक घाटा होगा।
88. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी का विचार है कि पाटन और क्षति के जारी रहने की संभावना के संबंध में घरेलू उद्योग के तर्कों में काफी दम है, हालांकि हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि चीनी ताइपेई से आयात एक निच बाजार के लिए होते हैं और यदि शुल्क भी हटा लिया जाता है तो घरेलू उद्योग पर असर नहीं पड़ेगा। पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की कीमतों में गिरावट से भी इस बात का संकेत मिलता है कि यदि शुल्क हटाये जाते हैं तो उस देश से आयातों का संभावित कीमत प्रभाव पड़ेगा। संबद्ध देश से निर्यातकों का निर्यातान्मुखीकरण भी उस देश के सकल निर्यात आंकड़ों से स्पष्ट है।
89. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी का विचार है कि यदि शुल्क हटाये जाते हैं तो पाटन और क्षति के जारी रहने अथवा पुनः होने की संभावना है।

## ट. अक्षतिकारी कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारणः

90. प्रकटीकरण के बाद के अपने निवेदन में घरेलू उद्योग ने, घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत की गणना और क्षति मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इसकी पहुंच मूल्य के साथ तुलना से संबंधित कई मुद्दे उठाए हैं। प्राधिकारी द्वारा उठाए गए मुद्दों की जांच की गई है और संब वस्तु की क्षतिरहित कीमत का परिकलन दिए गए तर्कों को ध्यान में

रखकर और उत्पादन लागत के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना का विस्तृत विश्लेषण और संवीक्षा करने के पश्चात् किया गया है। प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग की भारित औसत क्षतिरहित कीमत का निर्धारण \*\*\* रु0/मी.टन के रूप में किया गया है।

91. प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षतिरहित कीमत की क्षति मार्जिन के निर्धारणार्थ संबद्ध देश से निर्यातों के पहुंच मूल्य के साथ तुलना की गई है और क्षति मार्जिनों का निम्नानुसार अनुमान लगाया गया है:

कंपनी/देश	पहुंच मूल्य	क्षतिरहित कीमत	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन का दायरा
चीनी ताइपेई ***	***	***	***	5 से 15%

#### ठ. निष्कर्ष

92. पाटन, क्षति के मौजूदा स्तर, कारणात्मक संबंधों और पाटन और क्षति के जारी रहने की संभावना की उपर्युक्त जांच के आधार पर प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि:-

1. संबद्ध देश से संबद्ध माल का पाटित कीमतों पर भारतीय बाजार में प्रवेश जारी जारी है;
2. घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हो रही है;
3. यदि शुल्क हटाए जाते हैं तो संबद्ध देश से संबद्ध माल का पाटन और घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने की संभावना है।

#### ड. सिफारिशें

93. संबद्ध देश से हो रहे आयातों के कारण पाटन तथा क्षति के जारी रहने की संभावना के सकारात्मक निर्धारण के मद्देनजर प्राधिकारी की राय है कि उक्त देश से होने वाले आयातों पर लागू उपायों को जारी रखे रहने की आवश्यकता है। संबद्ध देश से हो रहे पाटन के मौजूदा स्तर और घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को देखते हुए प्राधिकारी की राय है कि लागू उपायों में संशोधन किए जाने की आवश्यकता है। अतः प्राधिकारी इसे जरूरी समझता है और नीचे वर्णित रूप तथा तरीके में चीनी ताइपेई से संबद्ध माल के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करता है।

94. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए अपेक्षतया कम शुल्क वाले नियम को देखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन अथवा क्षति मार्जिन के बराबर राशि के निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करता है जोकि अपेक्षतया कम है ताकि घरेलू उद्योग को हो रही क्षति समाप्त की जा सके। इस बात पर विचार करते हुए कि मूल जांच में लगाया गया शुल्क निर्धारित शुल्क आधार पर रहा था, प्राधिकारी चीनी ताइपेई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध माल के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की सिफारिश करता है जैसाकि नीचे दी गई तालिका में इंगित है।

### शुल्क तालिका

क्र.सं.	उप-शीर्ष अथवा टैरिफ मद	माल का विवरण	विशेष विवरण	उदभव का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	4002.59	एक्रीलो नाइट्राइल बुटाडिन रबड़(एनबीआर)	शून्य	चीनी ताइपेई	चीनी ताइपेई	कोई	कोई	187.90	मी. टन	अम.डा.
2	4002.59	एक्रीलो नाइट्राइल बुटाडिन रबड़(एनबीआर)		चीनी ताइपेई	कोई (पिछली अधिसूचनाओं में कवर किए गए देशों से इतर)	कोई	कोई	187.90	मी. टन	अम.डा.
3	4002.59	एक्रीलो नाइट्राइल बुटाडिन रबड़(एनबीआर)		कोई (पिछली अधिसूचनाओं में कवर किए गए देशों से इतर)	चीनी ताइपेई	कोई	कोई	187.90	मी. टन	अम.डा.

### द. अगली प्रक्रिया:

95. इस सिफारिश के आधार पर केन्द्रीय सरकार के आदेशों के विरुद्ध कोई भी अपील उक्त अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क, सेवा शुल्क अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

96. प्राधिकारी उक्त अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार समय-समय पर इस संबंध में जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार समय-समय पर इनमें यथा अनुशंसित निश्चयात्मक उपायों को जारी रखने, उनमें संशोधन करने या उनकी समाप्ति की आवश्यकता की समीक्षा कर सकेगा। प्राधिकारी द्वारा ऐसी समीक्षा के लिए किसी अनुरोध पर तब तक कोई विचार नहीं किया जाएगा जब तक कि कोई इच्छुक पक्षकार इसे, इस उद्देश्य हेतु निर्धारित समय सीमा के भीतर प्रस्तुत नहीं करता है।

क्रिस्टी एल. फर्नान्डेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

## MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

### SUNSET REVIEW

New Delhi, the 27th February, 2006

### FINAL FINDINGS

**Subject : Sunset Review of the definitive anti-dumping duty on import of Acrylonitrile Butadiene Rubber (NBR) originating in or exported from Chinese Taipei.**

**No. 15/1/2004-DGAD.**— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules);

#### A. Background

2. WHEREAS, having regard to above Rules the Designated Authority (herein after refereed to as Authority) initiated an antidumping investigation in 1999 into alleged dumping of Acrylonitrile Butadiene Rubber (NBR) originating in or exported from Chinese Taipei and Provisional Antidumping duty was imposed on imports of NBR from Chinese Taipei, vide customs notification dated 02.11.1999 on the basis of the preliminary findings of the Authority dated 28.09.1999. The final findings of the Authority were notified, vide notification dated 23.02.2000 and the Department of Revenue imposed definitive anti dumping duties on the subject goods, imported from subject country, vide notification dated 06.04.2000.

3. On the basis of a duly substantiated application filed by the Domestic Industry, in 2003 in terms of section 9A (5) of the said Act, requesting for continuation of the duty for a period of another five years, the Designated Authority initiated a sunset review proceedings against the said measure vide notification dated 15<sup>th</sup> September 2004, to examine whether the expiry of the duty would lead to continuation or recurrence of dumping and injury. Investigation was carried out for the period starting from 1<sup>st</sup> April 2003 to 31<sup>st</sup> March 2004

(POI). However, injury examination was conducted for a period from 2001-02 to 2003-04.

## **B. Procedure**

4. The procedure described below has been followed with regard to this investigation:

i) After notification of initiation of the investigation, questionnaires, along with the initiation notification, were sent to the lone known exporters/producers, in the subject country, i.e., M/s Nantex Industry Co. Ltd. Chinese Taipei in accordance with the Rule 6(4), to elicit relevant information. However, none of the exporters from the subject country filed their questionnaire response after the initiation of the investigation.

ii) The Taipei Economic and Culture Centre, New Delhi was informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers from their respective countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. Copies of the letters, petitions and questionnaires sent to the exporters, were also sent to the Taipei Economic and Culture Centre, New Delhi;

iii) Central Board of Excise and Customs (CBEC) and DGCI&S were requested to arrange details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigations;

iv) Questionnaires were also sent to the known importers and users of subject goods in India for necessary information. However, none of the importers of the subject goods filed any questionnaire response in the form and manner prescribed. However, the following importers and other interested parties participated in the investigation and filed their general responses/comments at different stages of the investigation.

All India Federation of Rubber Footwear Manufacturers;  
All India Rubber Industries Association,  
M/s Sundaram Industries Ltd;  
M/s Sepulchre Brothers

The views of the above interested parties, to the extent they are relevant, have been examined at appropriate places.

v) Non-confidential version of the evidence presented by various interested parties was made available in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;

vi) The information furnished by the domestic industry was verified to the extent possible to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicants so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;

vii) A public hearing was also held on 17<sup>th</sup> May 2005 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of the domestic industry, and importers/ users of the subject goods and representative of the Taipei Economic and Culture Centre, New Delhi. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions received from interested parties have been examined at appropriate places;

viii) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts considered for these findings and basis of determination were disclosed to known interested parties vide general disclosure and confidential disclosures to parties involved vide letters dated 24<sup>th</sup> August 2005. Comments to the disclosures received from the interested parties have also been duly considered in these findings to the extent the arguments and claims made by various parties are substantiated with evidence and data;

ix) The Authority has examined the confidentiality claims of various interested parties in respect of the data submitted by them. The information, which is by nature confidential or which has been provided on a confidential basis by the interested parties alongwith non-confidential summary thereof, has been treated confidential. \*\*\* in this Notification represents information furnished by the petitioner on confidential basis and so considered by Authority under the Rules;

### **C. Product under Consideration and Classification**

5. The product involved in the original investigation was Acrylonitrile Butadiene Rubber (NBR), and covered all types and grades of NBR i.e. Low, Medium and High NBR. This being a sunset review investigation, the same product has been covered within the scope of this investigation.

6. NBR is primarily used where oil resistance, abrasion resistance and heat resistance applications are involved. NBR is widely used in Defense, Automobile, Footwear, Fabrics, Printers, Oil field products industries etc. The product is classified under the category of synthetic rubber under sub-heading no. 40.02 at four-digit level and under no. 4002.59 at six-digit level. This classification is only indicative and in no way binding on the scope of present investigation. No significant argument has been made by any interested party regarding the scope of the product under consideration and its classification.

**D. Domestic Industry and Like product**

7. M/s. Apar Industries Ltd., Mumbai has filed the application for the sunset review of the duty already in force. The applicant is the sole producer of Acrylo Nitrile Butadiene Rubber (NBR) of various types and grades and accounts for complete production of subject goods in India. The product manufactured by the applicant is technically and commercially substitutable to the product being imported from the subject country and therefore, treated as 'like article' within the meaning of the term in the Rules. The applicant constitutes the 'like product domestic industry' within the meaning of the Indian Antidumping Rules. No substantive issue has been raised by any interested party about the scope of product under consideration, like article and the applicant's standing to file this review application.

**E. Submissions of interested parties and issues raised**

8. Though no questionnaire response has been received from any importer or consumer/industry association, comments of the interested parties received at various stages of the investigation, including in the written submissions after the public hearing, have been taken on record and examined by the Authority as follows:

**E.1 All India Rubber Industries Association and All India Federation of Rubber Footwear Manufacturers Association**

9. The above interested parties in their brief submissions at various stages in this investigation have argued

- That the petitioner's application is incomplete and does not give complete disclosure of facts and data; and there are many inconsistencies in the data and facts submitted by the petitioner in different public platforms.
- That there is a considerable improvement in the production/productivity and capacity utilization of the petitioner and therefore, there is no material injury caused to them.
- That it is paramount that the interest of the users is also protected.

**E.2 Sepulchre Brothers (India) Pvt. Ltd.**

10. M/s Sepulchre Brothers (India) Pvt. Ltd, in its brief submissions have stated that

- They are the sole indenter/ distributors of NBR exported from Chinese Taipei. But they have not been able to do much business on account of



the AD duty in force against that country and during the POI they have a meager business of only \*\*\*\* MT.

- That their import price was approx. US\$\*\*\*\* per MT CIF and the landed cost to their customers inclusive of CVD and ADD was approx Rs\*\*\*\*/- per MT, which was much above the locally available NBR.
- That their sales are to the niche market, only for limited number of customers needing NBR for specific application, which cannot be manufactured out of locally available NBR. These grades are either not produced by the domestic industry or their quality is not up to the satisfaction of the customers.
- While the capacity of their Taipei principals is good, they are unable to cater to the Indian market, because of huge demand and better price appreciation elsewhere.
- That the ADD on the product exported by their principals should be drastically reduced, if not fully lifted, in order to enable the Indian industry to play important role international trade.

### **E.3 M/s Sundaram Industries Ltd, Madurai**

11. M/s Sundaram Industries Ltd. has filed a brief response as the importer of the subject goods from Taipei and has inter alia submitted that;

- That while the domestic industry's interest is being protected through antidumping duty, the consumers of this product have no protection against significant cost escalation;
- That compared to the POI of 2003-04, the current scenario of supply and demand, as well as prices, are entirely different. There is a tight supply position and prices of all types of rubber and rubber chemicals have gone up substantially in the last one year.
- That at present question of dumping is irrelevant as the product is offered to the customers, by the overseas producers, on allocation basis due to tight supply position. Therefore, if the decision is taken on the basis of past data, the consumers will be affected as the situation has completely changed;
- That the Authority should also consider the limitation of capacity and capability of the domestic industry to meet requirements of the domestic users in terms of quantity and variety of grades required by the users;
- That switching over from one grade to other can be done only with the support of the respective manufacturer. Therefore, in spite of price difference, switching of products is not always feasible;

### **E.4 Views of the Domestic Industry**

12. The domestic industry has submitted that the exporters from Chinese Taipei have intensified the dumping into Indian market by absorbing the increase in associated cost of production and raw materials cost. They have further

submitted that in a sunset review investigation, the Designated Authority is required to examine whether cessation of anti dumping Duty in force is likely to lead to continuance or recurrence of dumping and injury and therefore, current dumping and injury are not relevant. They have argued that as the anti dumping duty has been in force since last five years, the injury parameters have to be examined in the context of exiting duties and the review should examine whether injury to the domestic industry would continue or recur in case of revocation of Anti Dumping Duty.

13. In this connection they have referred to the findings of other Authorities (EC finding in the matter of imposition of Anti Dumping duty on imports of Calcium Metal originating in Russia and China), in which it has been held that even though certain trends regarding the Community industry operations e.g. sales and market share had improved, it was considered that the community industry was suffering material injury, consisting in particular, of continuous price pressure and losses. The domestic industry has further argued that in another case (EC findings in the matter of Ferro Silico Manganese), it was held that though the situation of the domestic industry improved between the injury period, the positive development is to be seen in conjunction with the effect of the measures imposed on imports from other countries.

14. The domestic industry has further argued that though after imposition of anti dumping duty on imports from Taiwan has declined, significant commercial volumes of the product have continued after imposition of anti dumping duty at dumped prices. They have further argued that imports from Chinese Taipei are continuing at dumped prices, in spite of the antidumping duty being in force, and the domestic industry still suffers material injury due to the dumped imports. In any case the Authority is required to examine the likelihood of recurrence dumping and likelihood of recurrence of injury if the duties are removed in case the Authority finds no current dumping and injury. In this connection the domestic industry has cited the Appellate Body decisions in the United States - Sunset Review of Antidumping Measure on Oil Country Tubular Goods from Argentina. In the said matter the Appellate Body upheld the Panel finding that the obligation set out in Article 3 of ADA does not apply to likelihood-of-injury determination in sunset review. The Appellate Body also held that the ADA does not preclude the investigating authorities from cumulating the effects of likely dumped imports in the course of likelihood-of-injury determination. It also held that the conditions of Article 3.3 of ADA do not apply in the context of sunset review. Therefore, the arguments of the interested parties on the current dumping and causal links are immaterial in this investigation.

15. The domestic industry has further contested the arguments of the importers that the imports from Taipei was for the niche market and at a higher price than the domestic industry's price and have argued that the landed value (without ADD) from the subject country are much less than the domestic

industry's price for the equivalent grades. They have also contested the claim that the imported grades have different finish specifications.

16. They have also contested the arguments that the exporter from the subject country is finding difficult to cater to the Indian market because of better demand and price elsewhere. They have submitted that the gap between the prices to the Indian customers and other countries have significantly reduced in the injury period.

17. The domestic industry has further argued that the situation subsequent to the POI can neither be legally considered, nor factually seen in isolation. A host of parameters might have changed in the post POI period and any selective reference to the same would be unfair. They have argued that increase in prices in the global market does not mean no dumping.

18. The views of the parties to this investigation have been taken note of and appropriately addressed in these findings to the extent they are relevant.

#### **F. Examination of confidentiality claims**

19. The non-confidential submissions of the domestic industry were examined by the Authority. The applicant domestic industry has provided information on import data, estimated normal value and export prices on non-confidential basis and has claimed confidentiality on commercially sensitive information, such as evidence collected by them on the price of the product in the exporting country, their own sales and production data, as well as other injury information. However, indexed data in respect of most of the injury information has been provided on non-confidential basis. The information, which are by nature confidential or which have been provided on a confidential basis by the interested parties, alongwith non-confidential summary thereof, have been treated confidential. No other interested party has filed any substantial information on confidential basis.

#### **G. Dumping Determination**

20. The Authority has noted the arguments made by the applicants on the methodology and practices adopted by various Authorities in their Sunset Reviews and the relevant WTO jurisprudence on the subject. The Authority notes that this being a sunset review investigation it is required to look at the continuation and likelihood of recurrence of dumping in the event of withdrawal of duty. Therefore, the issue has been examined as follows:

##### **G.1 Continuation or recurrence of dumping**

21. No response has been received from any exporter of the subject goods from the subject country. Though one of the importers has stated that they have imported small quantity of the product from M/s Nantex Industry Co. Ltd. Chinese

Taipei, no evidence has been placed before the Authority by any interested party, including this importer about the normal value of the subject goods in the subject country. Therefore, the Authority has estimated the dumping margin on the basis of facts available.

## **G.2 Normal Value**

22. The domestic industry has provided certain evidence of selling price of certain grades of low and medium NBR, in the domestic market of the exporting country. Comparison of grades, for which information has been provided, and the details of the grades indicated in the exporter's product list, as supplied by the applicant, indicates that price information of about 3 grades of Medium NBR and two grades of High NBR. For the purpose of the determination of normal value, this information has been accepted as the best facts available with the Authority.

23. As per the import data only two types of NBRs, i.e. Medium NBR and High NBR have been exported from the subject country to India during the POI. Therefore, for the purpose of normal value determination these two types have been considered as 'like products'. Accordingly, weighted average normal values have been determined on facts available basis as US\$\*\*\*\*per MT for Medium NBR and US\$\*\*\*\*per MT for High NBR.

## **G.3 Export Price**

24. The export price has been determined on the basis of DGCIS transaction data as best facts available. The weighted average CIF import prices reported in DGCIS transaction-wise data has been adjusted for the inland transport and ocean freight, insurance, handling and commission on facts available basis to arrive at ex-works price. Accordingly, net export price of NBR has been determined as US\$ \*\*\*\*per MT for Medium NBR and US\$\*\*\*\*per MT for High NBR.

## **G.4 Dumping Margin**

25. On the basis of the estimated normal value in the country of export and export price to India the current dumping margin works out as US\$\*\*\*\* Per MT i.e. 25% of the export price.

## **G.5 Likelihood of continuation of dumping**

26. The examination of dumping during the POI indicates that the dumping margin in respect of the subject goods, exported from the subject country, is significant though the volumes are low. The interested parties have argued that there is a substantial change in the scenario after the POI due to several factors, including change in raw material prices and low availability of NBR from the subject country. They have argued that the NBR is supplied by the producers on allocation basis because of unavailability of the product in the world market due

to rationalization of the capacities world over in the recent past and therefore, the question of dumping does not arise in such a tight supply situation.

27. The domestic industry has argued that the producers in the subject country have significant capacity, whereas demand in their home market is significantly lower. Quoting Worldwide Rubber statistics, 2004, published by International institute of Synthetic Rubber Producers Inc., the domestic has claimed that annual capacity of the producers in Chinese Taipei is about 24000 MT per annum. After exporting about 16000MT of the product these producers have excess capacities to enable them dump the product in the Indian market once the duty is revoked.

28. The Authority notes that market intelligence report submitted by the applicant indicates that at present M/s Nantex is the only producer of NBR in the subject country. The data submitted by the applicant shows that Chinese Taipei exports about 16000MT of the subject goods to the world market, whereas exports to India is about 300 MT per year, throughout the injury investigation period, accounting for about 2% of its total exports. However, the Authority notes that antidumping duty was in force against this country on fixed duty basis and therefore, volume and prices during this period may not be a very good indicator of likelihood of continuation of dumping.

29. The interested parties have claim that in the changed market dynamics of the price structure and supply demand scenario there would not be any need for any producer to dump the goods in India. Though the likelihood test is required to take into account the changed market dynamics to examine whether there is a likelihood of continuation of dumping in the event of removal of duty, no credible evidence has been provided by any interested party in this respect.

30. The Authority notes that the price difference between the home market sales of the producers in the subject country and their export price to India has remained significant, in spite of the duty being in force. The world trade data indicates that the export price of the subject goods to the world market, from the subject country has been higher than the export price to India for the comparable periods and the price difference has remained to be significant.

31. Considering the above arguments and facts available, the Authority is of the view that in spite of the changed market dynamics it would be difficult to conclude that the price difference between the home market price and the export price to India would be completely eliminated and therefore, exports would likely to continue to enter the Indian market from the subject country at dumped prices in the event of revocation of the duty.

## **H. INJURY DETERMINATION**

32. The Authority notes that this being a sunset review of antidumping duty already in force, continuation of material injury to the domestic industry, as well as likelihood of continuation or recurrence of material injury, needs to be examined in the context of import of the subject goods from the subject country.

### **H.1 Continuation of Injury**

33. The Authority notes the arguments of the domestic industry that injury and causal link determination is not mandatory in a sunset review investigation as has been held by the Appellate Body in its final report in the matter cited earlier. However, having established positive dumping margin for the subject goods exported from the subject country, during the injury investigation period, the Authority has also examined the injury, if any, suffered by the domestic industry during the same period. For the purpose of the injury examination the domestic industry constitutes the sole domestic producer and the petitioner company in the instant case.

34. The Authority notes that NBR is being imported from a number of countries, including the countries/territories under parallel investigation. The Authority also notes that definitive antidumping duty is in force against Japan, Korea RP, Germany and provisional duty is in force against imports from the European Union, Brazil and Mexico.

### **H.2 Material Injury**

#### **H.2.1 Views of the interested parties**

35. The interested parties have argued that after imposition of antidumping duty against several countries there is a considerable improvement in the production/productivity and capacity utilization of the petitioner and therefore, there is no material injury caused to them.

#### **H.2.2 Views of the Domestic Industry**

36. The domestic industry has argued that in spite of antidumping duty protection against imports from Japan, Chinese Taipei, Germany and Korea RP, the domestic industry has suffered continued injury on account of the dumped imports from several sources. They have argued that though the antidumping duty protection against the above countries has helped them to improve their performance marginally, due to dumping from new sources and intensified dumping from the certain countries attracting duty they have not been able to benefit much out of it, and continue to suffer material injury. They have further submitted that in spite of improvement in its productivity, volume of output, and reduction in cost of production through various cost-cutting measures, they have

failed to realize remunerative prices to recover their cost, due to continued dumping from various sources.

37. The domestic industry has further argued that the parameters listed in Article 3.4 are neither exhaustive nor one or several of these factors necessarily can give decisive guidance. It is, therefore, not necessary that every injury parameter must reflect injury to the domestic industry. Quoting several decisions of the European Commission the domestic industry has argued that as per EC practice deterioration in performance of the domestic industry after improvement means deterioration, even if POI parameters are better than the base year parameters. They have argued that even when some parameters improved; it was held by the EC that the Community industry suffered material injury.

### **H.2.3 Examination by the Authority**

38. The Authority has taken note of various arguments raised by various parties with regard to the material injury to the domestic industry. The Authority also notes that antidumping duty is in force against Japan, Korea and Germany, in addition to the subject country and reviews against Korea, Germany has confirmed continued dumping and injury from these countries. In its final determination in respect of European Union, Brazil and Mexico, the Authority has determined that the imports from these countries are also at dumped prices. Therefore, for the purpose of injury and causal link analysis, the imports from these countries also have been treated as dumped imports.

39. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

40. For the purpose of injury analysis the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods from the subject country on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any.

**(A) VOLUME EFFECT: Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry**

41. The effects of the volume of dumped imports from the subject country, as well as dumped imports from other countries have been examined as follows:

**i) Import Volumes and share of subject country:**

42. For the purpose of injury determination, the Authority examined the DGCI&S transaction-wise data as well as PPR data submitted by the Applicant. However, written submission of one of the importer shows higher import volumes from the subject country compared to the volume reflected in DGCIS and PPR. The applicant also submitted data based on world trade atlas, which showed higher volumes of exports of the product involved from the subject country to India. Therefore, the Chinese Taipei Authorities were requested to provide inputs and confirm the trade statistics submitted by the applicant from secondary sources. Taipei Authorities have submitted their Customs data, which approximately corresponds to the world trade atlas data, submitted by the applicant and the importer in their submissions.

Country	Quantity in MT			2003-04 (POI)
	2000-01	2001-02	2002-03	
Chinese Taipei	301.25	340.22	297.71	303.86
Trend	100.00	112.94	98.83	100.87
Countries under investigation (EU, Brazil, Mexico)	633.16	847.06	1708.51	2343.49
Others With AD Duty	2278.75	2516.78	2812.29	3844.14
Others	0	117.93	216.95	200.02
Total	3213.16	3821.99	5035.46	6691.51
Trend	100	119	157	208
Share of Taipei in total imports	9%	9%	6%	5%

43. While total imports have increased by about 108% compared to the base year the import from the subject country has remained more or less constant and its share in total imports of the subject goods has dropped by 4% compared to the base year.

44. The volume of imports has also been analyzed with respect to the growth in demand and market shares.

Qty in MT

	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
Total Imports	3213	3822	5035	6692
Trend	100	119	157	208
Domestic sales	****	****	****	****
Indexed	100	114	118	133



Captive consumption	****	****	****	****
Indexed	100	80	98	101
Demand	****	****	****	****
Indexed	100	114	131	159

45. The above data indicates a healthy growth in demand for the subject goods in the domestic market. Whereas total demand of the product shows a growth of 59% over the base year, the import from the subject country has remained more or less same during the injury investigation period.

## ii) Demand, Output and Market shares

### a) Production of the Domestic Industry

Quantity in MT

Capacity & Production	2000-01	2001-02	2002-03	POI
INSTALLED CAPACITY	6,250	8,350	8,800	8,800
Indexed	100	134	141	141
TOTAL PRODUCTION	****	****	****	****
Indexed	100	130	130	149
CAPACITY UTILIZATION - %	****	****	****	****
Indexed	100	97	92	106

46. The Authority notes that the capacity addition in the year 2001-02 and thereafter, are mainly by way of de-bottlenecking in the existing capacity in response to healthy demand scenario for the product in the domestic market. The data also shows domestic industry has improved its production compared to the base year. The capacity utilization has also improved.

### b) Sales of Domestic Industry

Quantity in MT

Particulars	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04 (POI)
Opening Stock	****	****	****	****
Indexed	100	42	145	136
Production (NBR Bale)	****	****	****	****
Indexed	100	123	121	137
Domestic sales	****	****	****	****
Indexed	100	114	118	133
Export sales	****	****	****	****
Indexed	100	136	138	179
Captive Consumption	****	****	****	****
Indexed	100	80	98	101
Closing Stock	****	****	****	****
Indexed	100	341	315	354

47. The data above shows that the production increased by about 37% compared to the base year and 16% compared to the previous year and the domestic sales has increased by 33% and 15% during the corresponding periods. The data also shows substantial rise in inventory as the closing stocks have increased by 254%. Major increase in the sales is in the export segment though the volume is low.

**b) Demand and Market Share**

**MT**

Particulars	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
<b>Import from Subject Country</b>	301.25	340.22	297.71	303.86
Indexed	100	112	111	101
<b>Import from Other Countries</b>	2911.91	3481.77	4737.75	6387.65
Indexed	100	119.57	162.70	219.36
<b>Total Imports</b>	3209.71	3818.60	5029.23	6692.07
Trend	100	126	166	208
<b>Total Domestic Sales</b>	****	****	****	****
Indexed	100	114	118	133
<b>Captive Consumption</b>	****	****	****	****
<b>Total Domestic Demand</b>	****	****	****	****
Trend	100	114	131	159
<b>Share in Demand (Indexed)</b>				
<b>Domestic Industry</b>	100	101	90	83
<b>Subject Country</b>	100	99	75	63
<b>Others</b>	100	105	124	138
<b>Captive Consumption</b>	100	71	74	64
<b>Total share of imports in Demand</b>	100	105	119	131

48. While domestic demand of the product under consideration has increased by about 59% from the base year, the share of the domestic industry in the total demand has declined from 54% to 45% during the same period. At the same time the share of the dumped imports from the subject country has also declined from 3.58% to 2.26%, while share of imports from other sources, including dumped imports from countries attracting duty has significantly increased by about 13%.

**(B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry**

49. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry (worked out after normating the costing

information of the Domestic Industry) have been compared with the landed cost of imports from the subject countries.

(i) **Price undercutting and underselling effects**

Particulars		2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
Cost of Sales	Rs./MT	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	85.73	90.59	90.96
Selling Price	Rs./MT	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	99	92	96
<b>Landed value</b>					
Subject country	Rs/MT	78980	84420	84200	75130
Indexed		100	106.89	106.61	92.38
Duty in force	Rs/MT	6288	6288	6288	6288
AD Duty paid Landed Value	Rs/MT	85268	90708	90488	81418
<b>Price Undercutting</b>					
subject country Without ADD	Rs/MT	****	****	****	****
	%				0 to 10%
NIP	Rs/MT				****
<b>Price Underselling</b>					
Subject country	Rs/MT				****
Subject country	%				5 to 15%

50. The selling price (net sales realization) of the domestic industry shows significant decline compared to the base year though the cost of sales after showing decline in 2001-02, has shown an increasing trend. At the same time the landed value of imports from the subject countries shows significant decline over the base year.

51. Price undercutting effect of dumped imports from the subject country has been determined by comparing the weighted average landed value of dumped imports from the subject country over the entire period of investigation with the weighted average net sales realization of the domestic industry for the same period. For this purpose landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the CIF value of imports from the subject country.

52. In determining the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

53. For the purpose of price underselling determination, the weighted average landed prices of imports from subject countries/territories have been compared

with the Non-injurious selling price of the domestic industry determined for the POI.

54. The Authority notes that Imports from the subject country have been significantly below the net sales realization of the domestic industry as well as the non-injurious price estimated for the domestic industry thus resulting in significant price undercutting and underselling. However, the antidumping duty paid landed value of the subject goods imported from the subject country indicates negative price undercutting effect. The Authority also notes that the domestic selling price of the domestic industry has declined significantly during the injury period indicating significant price depression in response to dumped imports from various sources including the subject country. Therefore, price-undercutting analysis may not provide a proper indication of the price effects of dumped import from the subject country.

(ii) Price suppression and depression effects of the dumped imports:

55. The Authority notes that though the volume as well as share of the dumped import from the subject country is too small to significantly depress or suppress the prices of the domestic industry, decline in domestic selling prices during the injury period is significant in response to dumped imports from several sources including the subject country.

#### H.4 Examination of other Injury Parameters

56. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analysed by the Authority as follows:

##### i) Actual and potential effect on productivity

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04 (POI)
Productivity	Per Employee	****	****	****	****
Indexed		100.00	124.18	124.35	145.99
Productivity	MT/Day	****	****	****	****
Indexed		100	123.21	120.54	136.89

57. Productivity of the domestic industry, measured in terms of its labour productivity of the output and daily output has improved substantially.

##### ii) Profits and actual and potential effects on the cash flow

58. Total revenue and cash flow of the domestic industry from its domestic operations shows marginal improvement due to increase in domestic sales.

However, after improving its profitability during the year 2001-02, the profitability of the domestic industry has declined and it continues to suffer loss during the POI due to declining per unit realization.

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
<b>Profits</b>					
Cost of Sales	Rs./MT	****	****	****	****
Indexed		100	85.73	90.60	90.96
Selling Price	Rs./MT	****	****	****	****
Indexed		100	98.85	92.47	95.58
Profit/Loss	Rs./ MT	(****)	****	(****)	(****)
Indexed		(100)	48.49	(71.45)	(43.64)
Total Profit/Loss on Domestic Sales	Rs. Lacs	(****)	****	(****)	(****)
Indexed		(100)	55.46	(84.58)	(58.04)
Depreciation	Rs. Lacs	****	****	****	****
Indexed		100	100.09	96.49	98.37
Cash Profit/Loss from NBR	Rs. Lacs	(****)	****	(****)	****
Indexed		(100)	325.69	(63.89)	12.01

### iii) Employment and wages

59. The employment level has declined marginally. But the expenses on account of salary and wages have increased by about 20%. However, increase in the expenses towards salary and wage is in tandem with the increase in production during the comparable periods. Therefore, this factor does not indicate injury to the domestic industry.

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
Employment					
No. of Employee	Nos.	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	104.51	104.51	102.26
Wages	Rs Lacs	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	107.94	113.79	120.15
Wage per Employee	Rs. Lacs	****	****	****	****
Trend	Indexed	100	103.28	108.88	117.50

### iv) Return on investment and ability to raise capital

60. The financial performance of the domestic industry has also been analysed in terms of its cash profits and return on investment. The interested parties have argued that the overall performance of the company has improved. However, the Authority notes that though the overall performance of the Company is good its profit from its NBR operation has shown deteriorating performance after showing a profit in 2001-02. The return on capital employed by the domestic industry shows deterioration after improving in 2001-02.

Rs in Lacs				
Particulars	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04 POI
<b>Capital Employed - NFA + Working Capital</b>	****	****	****	****
Indexed	100.00	96.33	101.84	100.52
<b>Profit</b>	(****)	****	(****)	(****)
Indexed	(100.00)	55.46	(84.58)	(58.05)
<b>Interest</b>	****	****	****	****
Indexed	100.00	120.79	106.48	75.78
<b>PBIT</b>	****	****	****	****
Indexed	100.00	445.27	146.79	108.42
<b>Return on Capital Employed - NFA + Working Capital</b>	****	****	****	****
Indexed	100	462.23	144.14	107.86

#### v) Investment

61. The Authority notes that domestic industry raised its capacity from 6250 MT to 8800 MT by de-bottlenecking the existing capacity with a capital investment of about \*\*\*\* Crores. There has been no further fresh investment by the domestic industry during the investigation period and there are no plans for further investment as submitted by them.

#### vi) Magnitude of Dumping

62. Estimated margin of dumping from the subject country during the POI is significant.

#### vii) Factors affecting prices

63. The Authority notes that there is a significant rise in the prices of the principal raw materials in the world market affecting the cost of production of the subject goods for the domestic industry over the injury period after significant decline in 2000-01. In spite of a marginal increase in the net sales realization of the domestic industry in the POI sales realization of the domestic industry does not recover the full cost to make and sale.

64. The Authority also notes that there is no viable substitute to this product and M/s Apar Industry is the sole producer of the subject good in India. Therefore, domestic competition does not affect the prices.

65. The Authority notes that dumped imports of subject good is entering the Indian market from several countries, including the subject country, and investigation is in progress against several countries, including the members of the European Union, Brazil and Mexico. Volume of imports from these countries

is significant and during the period under investigation the imports from these sources seem to have significant price suppression and depression effect on the prices of the domestic industry.

#### viii) Inventories

Particulars	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04
Inventories - at the end of period	MT	****	****	****	****
Indexed		100	341	315	213
Inventories as % of production		****	****	****	****
Trend	Indexed	100	278.02	263.87	259.33

66. The inventory data of the domestic industry indicates significant inventory built up and inability of the domestic industry to off-load its product in the domestic market.

#### H.5 Other Known factors and Causal Link

67. The Interested parties have argued that the dumped imports are not responsible for the injury, if any, caused to the domestic industry. They have argued that injury, if any, is due to inefficiency and uneconomical plant size of the domestic industry and cannot be attributed to the dumped imports from the subject countries/territories. They have further argued that due to its limited capacity the applicant is unable to meet the requirement of the domestic demand. The user industry has argued that the scenario of costs and prices have completely changed in the past one year. While the availability is scares and material is supplied on allocation basis dumping is irrelevant because the prices have been continuously moving upwards.

68. The domestic industry has argued that the volume of dumped imports from the subject country has remained more or less same from the base year and constitutes about 2.26% of the total domestic demand, in spite of the fact that antidumping duty is in force against this product from the said country. Therefore, in a situation where the exporter continues to export a significant volume, in spite of the antidumping duty, it would follow that the volume would at best increase with the revocation of the duty. The domestic industry has further argued that this being a sunset review, the standards for examination of volume effects and causality are different. They have argued that even when the volume of import has been zero, antidumping duties have been extended by other countries and in certain jurisdictions a market share of 1% have been found to be significant to cause injury to the domestic industry. Therefore, market share of 2.26% cannot be ignored as insignificant for causing injury.

69. In this connection attention has been drawn to several Panel and Appellate body decisions on the standards of review and applicability of Article 3 (including Article 3.5: causal links) examination in a sunset review. It has been argued that in the United States - Sunset Review of Antidumping Measure on Oil Country Tubular Goods from Argentina, the Appellate Body upheld the Panel finding in the same matter that the obligation set out in Article 3 of ADA does not apply to likelihood-of-injury determination in sunset review. The Appellate Body also held that the ADA does not preclude the investigating authorities from cumulating the effects of likely dumped imports in the course of likelihood-of-injury determination. It also held that the conditions of Article 3.3 of ADA do not apply in the context of sunset review.

70. Notwithstanding the above arguments and the accepted view of the Appellate Body that injury and causal link examination under Article 3 of ADA is not a mandated requirement in a sunset review; the Authority has examined the current injury and causal link between the current injury and dumped imports from the subject country as well as likelihood-of-injury simultaneously. In this regard the following indicative factors as laid down in the Rules have been examined.

**i) Volume and prices of imports from other sources**

71. Article 3.5 mandates examination of volume and value of imports not sold at dumped prices as a factor for non-attribution analysis. The Authority notes that during the POI, other than the subject country, imports have taken place from several other countries including Japan, Korea, European Union, Brazil and Mexico. Volume of the subject goods entering the Indian market at un-dumped prices is insignificant as the dumped imports from all sources account for less than 3% of total imports. While some countries including, Japan and Korea were attracting antidumping duty during the POI, imports were also entering from other countries named above in significant quantities. Imports from these sources have also been found to be at dumped prices and significantly undercutting the domestic industry.

**ii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption**

72. Total domestic demand of the product under consideration, has shown a very significant increase by about 59% during the period of investigation compared to the base year. There is no significant change in consumption pattern of the product in the domestic market, which can be attributed to the injury to the domestic industry.

**iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers**

73. The interested parties have argued that the sole domestic producer is trying to create a monopoly market by blocking competition through imposition of



antidumping duty. The Authority notes that the subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. M/s Apar Industries Ltd. is the sole producer of the subject goods in the country. There is no restriction on fair trade in the country and imports of the subject goods take place from several countries and compete with the domestic producer. However, major portion of the imports from several sources have either been determined as dumped imports or are under investigation for allegation of dumping.

#### **iv) Development of technology and export performance**

74. The interested parties have argued that the inefficient plant size of the domestic industry is one of the causes of injury suffered by it. The production facilities of the cooperating foreign producer in different countries were verified by the Authority during various investigations and it was seen that the producers apply similar production technology. In fact most of the producers in the world use the technology developed by technology leaders like Goodyear. The capacities and volume of production of some of these producers are not very different from the capacity of the domestic producer in India. Therefore, the argument of inefficient capacity or development of technology or inefficient method of production of the domestic industry cannot be treated as a cause of injury to the domestic industry.

75. The Authority notes that the domestic industry has very small export turnover of the product under consideration though it shows steady growth during the investigation period. Therefore, export performance of the domestic industry is very insignificant and does not affect the domestic industry's performance very significantly. Therefore, export performance cannot be attributed as a reason of injury suffered by the domestic industry.

#### **v) Productivity of the Domestic Industry**

76. Productivity of the domestic industry in terms of labour output and daily output has shown substantial improvement. Therefore, productivity is not a factor, which can be attributed to the injury of the domestic industry. In fact domestic industry has tried to reduce its losses in its domestic operation through improvement in productivity.

#### **I. Likelihood of continuation or recurrence of Injury**

##### **I.1 Views of the domestic industry**

77. The domestic industry has argued that injury to the domestic industry is required to be examined in the context of the requirements under sunset review

and not as per the factors laid down for a threat analysis. They have *inter alia* argued

- That the domestic industry is already suffering injury as a result of dumped imports from a number of countries including the subject country;
- That imports from the subject country are still undercutting the domestic prices and should the present duties be revoked, the extent of price undercutting would increase;
- That volume of dumped imports from the subject country would increase considerably;
- That the production capacity in the subject country is significantly higher than their domestic demand and there is significant unutilized capacity in the subject country;
- That export from the subject country has declined in last 2-4 years, which implies that the moment antidumping duty is revoked large shipments are imminent as there is a significant over-capacity in the subject country and there is a threat that a significant portion of the unused capacity would be used to flood Indian market;
- That removal of present duty would result in further price depression and further erosion of the profitability of the domestic industry;
- That the present duty is insufficient to remove the injury to the domestic industry;
- That the producers and exporters from the subject country are dumping the subject goods in other countries also at similar prices. In fact the price at which the goods are exported to other countries is lower than the price at which it is being exported to India. Therefore, India remains an attractive market for the exporters in the subject country and dumping in Indian market would intensify if the duty is revoked;
- That the market share of dumped goods from the subject country has declined because of the duty in force, which has restricted the dumped imports to India;
- That the price at which the material is being exported cannot permit recovery of cost of production of any producer world over;

78. In summary the domestic industry has argued that the domestic industry continues to suffer material injury due to dumped imports from various sources, including the subject country, and there is a strong likelihood that injury would continue or recur, if the duty is revoked.

79. In its post disclosure comments the domestic industry has further argued that the likelihood test for injury should be based on the actual and potential effects of the dumped imports on various parameters and not based on the threat parameters as has been proposed by the Authority. They have argued that it requires an examination of a potential situation when the duties are not in force with reference to the parameters relating to export activities of the exporters in the subject country, in various markets in the world, vulnerability of the domestic

industry, market share of the foreign producers with the existing measures, etc. They have further argued that the exporters in Taiwan are not exporting higher volumes only because of the existing ADD and once the same is withdrawn there is every likelihood that the volumes would go up. Further, continuation of dumping from the subject country clearly established that dumping is likely to continue and rather intensify in the event of withdrawal of duty and would result in increase in price undercutting.

80. It has been further argued that the production capacity of the exporters in Taiwan is significantly higher than their demand. In addition to this capacity the fact that the exporter from Taiwan is setting up a huge plant in China clearly implies that its exports to one of its major market, i.e. China would reduce. In such a scenario the exporter would be faced with a huge unutilized capacity, which would find its place in the Indian market. It has also been argued that Taiwan exports large quantities of this product to Hong Kong, which does not have significant domestic consumption of the same. Therefore, this product is likely to be transshipped from Hong Kong.

## **1.2 Views of the interested parties**

81. The importers and other interested parties have argued that due to rationalization of capacities world over, there is a supply constraint and the goods are now supplied by the foreign producers only on allocation basis. Therefore, in the changed scenario of demand and supply, and in a sellers market of this nature, there is hardly any possibility of dumping to occur. The interested parties have argued that very small quantities have been imported from Chinese Taipei during the POI, only for very specific niche production. They have argued that the post POI price developments should also be taken into consideration, as the current prices have gone up significantly in the world market due to increase in petroleum based raw material prices. Therefore, continuation of duty on the subject country is not warranted.

## **1.3 Examination by the Authority**

82. The domestic industry has argued that the requirement under sunset review is to examine whether revocation of anti dumping duty is likely to lead to continuance or recurrence of injury to the domestic industry and therefore, any examination based on the factors listed for a threat analysis would be flawed. While the arguments of the domestic industry is valid to the extent that any likelihood test should not be based only on a threat perception alone as there are several factors which could be unique to a situation to be examined to find what may happen in the event of withdrawal of the duty. Therefore, all such factors brought to the notice of the Authority, have been examined, to find if there is a likelihood of continuation of injury in the event of withdrawal of the duty. In this connection following factors have been examined:

**(a) Rate of increase of dumped imports from the subject country as well as other sources::**

Quantity in MT.

	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04 (POI)
Chinese Taipei	301.25	340.22	297.71	303.86
Trend	100.00	112.94	98.83	100.87
Total Imports	3213.16	3821.99	5035.46	6691.51
Trend	100	119	157	208

83. It is observed that the dumped imports from the subject country have remained almost constant at 300 MT per annum during the period for which duty was in force, while total imports have more than doubled during the same period. The price ranges of the imports from various sources do not indicate a very wide variation. The composition of imports also indicate that in spite of antidumping duty being in force against certain countries like Korea RP there is a significant rise in the volume of dumped imports during the same period, whereas dumped imports from the subject country has remained almost static indicating thereby that the duty has not affected a segment of the market which continues to import, while other segments of the market might have stopped importing the goods from the subject country due to the duty in force. Therefore, in the event of withdrawal of duty the volume of dumped imports is likely to go up.

**(b) Disposable capacity and potential exports to India**

84. Worldwide Rubber Statistics 2004, (International Institute of Synthetic Rubber Producers Inc.) and Chemicals Economics Handbook indicate total production capacity of Nitrile – Solid Rubber in Chinese Taipei as 16000 MT (24000MT of Latex). As per Chemicals Economics Handbook (CEH), Chinese Taipei imports about 9500 MTs, and exports about 16000 MTs of Solid Nitrile Rubber per annum. The excess capacity mostly caters to exports to various countries.

85. World Trade Atlas data indicates that major importers of Nitrile Rubber from this country are China PR, Hong Kong, USA and Japan, accounting for about 85% of total exports from Chinese Taipei. India accounts for less than 2% of total exports of the subject goods from this country. It is clear that the production capacity of the exporters in Taiwan is significantly higher than their domestic demand.

86. It has been brought to the notice of the Authority that the Chinese Taipei producer is setting up a huge plant in China implying that its exports to one of its major market, i.e. China would reduce. In such a scenario the exporter would be faced with a huge unutilized capacity, which would find its place in the Indian market. It has also been noted that Taiwan exports large quantities of this

product to Hong Kong, which does not have significant domestic consumption of the same. Therefore, this product is also likely to be transshipped from Hong Kong to other countries, including India.

**(c) Potential effect on prices:**

87. The world trade atlas data showing the price trend of this product indicates that while the average export price of the subject goods from Chinese Taipei to the world market is about US\$1.30 per Kg the export price to India is about US\$1.24 per MT. At the same time antidumping duty paid landed value of the imports from the subject country are marginally above the net sales realization of the domestic industry, indicating that the current prices, at which the goods from the subject country are entering the Indian market, have only marginal negative price effect on the domestic prices. However, the Authority notes that dumped imports from all dumped sources have significant price depression effects on the domestic industry. Therefore, in the event of withdrawal of duty the landed value of imports from the subject country is likely to have significant price effect on the domestic industry resulting in further loss to the domestic industry.

88. In view of the above the Authority is of the view that arguments of the domestic industry on the likelihood of continuation of dumping and injury has considerable force, though the interested parties have argued that the imports from Chinese Taipei caters to a niche market and would not affect the domestic industry even if the duties are revoked. Drop in prices of the subject goods during the POI, in comparison to the previous years, also indicate that there is potential price effect of the imports from this country once the duties are revoked. Export orientation of the exporters from the subject country is also evident from the total export figures of that country.

89. In view of the above the Authority is of the view that dumping and injury is likely to continue or recur if the duties are revoked.

**J. Determination of Non-injurious Price and injury margin**

90. In their post disclosure submission the domestic industry has raised several issues regarding computation of Non-injurious price for the domestic industry and comparison of the same with the landed value for the purpose of injury margin determination. The issues raised have been examined by the Authority and the Non-injurious Price for the subject goods has been worked out taking into account the arguments raised and after a detailed analysis and scrutiny of information provided by the domestic industry in respect of its cost of production. Weighted average Non-injurious price for the domestic industry has been determined by the Authority as Rs\*\*\*\*/-per MT.

91. The non-injurious price determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports from the subject country for determination of injury margin and the injury margins have been estimated as follows:

Company/ Country	Landed Value	NIP	Injury Margin	Injury Margin Range
Chinese Taipei	*****	*****	*****	\$ to 15%

#### K. Conclusions

92. On the basis of the above examination of the current level of dumping, injury, causal links and likelihood of continuation of dumping and injury the Authority concludes that

1. The subject goods are continuing to enter the Indian market from the subject country at dumped prices;
2. The domestic industry is suffering material injury due to the dumped imports;
3. Dumping of the subject goods from the subject country and injury to the domestic industry is likely to continue if the duties are withdrawn.

#### M. RECOMMENDATIONS

93. In view of positive determination of likelihood of continuation of dumping and injury on account of imports from the subject country, the Authority is of the opinion that continuation of the measure is required against imports from the said country. Considering the current level of dumping from the subject country and injury suffered by the domestic industry, the Authority is of the opinion that the measure in force needs to be revised. Therefore, Authority considers it necessary and recommends anti-dumping duty on imports of subject goods from Chinese Taipei in the form and manner described hereunder.

94. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the margin of dumping or margin of injury, whichever is lesser, so as to offset the injury caused to the domestic industry. Considering that the duty in the original investigation was imposed on fixed duty basis the Authority recommends continuation of definitive antidumping duty, on all imports of subject goods originating in or exported from Chinese Taipei as indicated in Col 9 of the table below.

**Duty Table**

Sl. No	Sub Heading or Tariff Item	Description of Goods	Specification	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit of Measure	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	4002.59	Acrylonitrile Butadiene Rubber (NBR)	Nil	Chinese Taipei	Chinese Taipei	Any	Any	187.90	MT	US\$
2	4002.59	Acrylonitrile Butadiene Rubber (NBR)	Nil	Chinese Taipei	Any (Other than countries covered in earlier notifications)	Any	Any	187.90	MT	US\$
3	4002.59	Acrylonitrile Butadiene Rubber (NBR)	Nil	Any (Other than countries covered in earlier notifications)	Chinese Taipei	Any	Any	187.90	MT	US\$

**N. Further Procedures**

95. An appeal against the order of the Central Government arising out of this determination shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

96. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time schedules stipulated for this purpose.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Designated Authority